मूल्य रु. ५-००

# श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १७३ • दिसम्बर-२०२१

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

नूतन वर्ष पर अन्नकूट दर्शन

दिपावली चोपडा पूजन

વિશ્વના સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદમાં બિરાજમાન શ્રી નરનારાયણ ભગવાનના ૨૦૦ વર્ષ

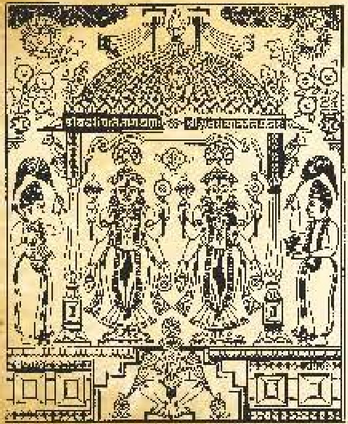

# પર્વ

૨૭ ફેબ્રુઆરી થી ૫ માર્ચ ૨૦૨૨

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

વિશ્વના સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદમાં બિરાજમાન શ્રી નરનારાયણ ભગવાનના ૨૦૦ વર્ષ

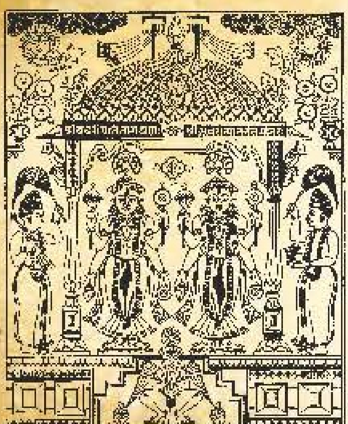

પર્વ

૨૭ ફેબ્રુઆરી થી ૫ માર્ચ ૨૦૨૨

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

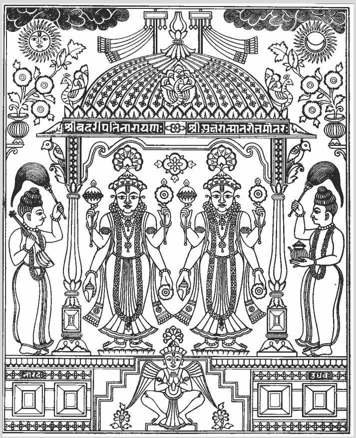


**संस्थापक**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
( महंत स्वामी )
मो. ९३१३७१९२३२

**पत्र व्यवहार**

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in



# श्री स्वामिनारायण

**श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र**

**वर्ष - १५ ● अंक : १७३ ● दिसम्बर-२०२१**


## अ नु क्र म णि का


| | | |
|---|---|---|
| ०१. | अस्मदीयम् | ०६ |
| ०२. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा | ०७ |
| ०३. | बालस्वरुप कष्टभंजनदेव - कांकरिया | ०८ |
| ०४. | ''पर्व'' के साथ साथ | ११ |
| ०५. | श्रीहरि के तीनो अपरस्वरुपोके मुख से आशीर्वचन-संक्षिप्त | १३ |
| ०६. | महेसाणा | १६ |
| ०७. | श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से | १८ |
| ०८. | भक्ति सुधा | १९ |
| ०९. | सत्संग समाचार | २३ |

# अस्मदीयम्

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव अपने समझ शीघ्र ही आ रहा है । समस्त सत्संग को इस महामहोत्सव को लेकर अधिक उत्साह है । गाँव-गाँव या शहर-शहर तक समयानुकुल संत लोग उत्सव के लिये पहुँचे । उत्सव का सम्पूर्ण प्रबन्ध, स्थल, कार्यक्रम इत्यादि की सूचना इस सामयिक द्वारा सूचित किया जायेगा । देश-विदेश के सभी हरिभक्त यह अवसर आप सभी सहपरिवार आपके जीवन में आये । इस ''पर्व'' महोत्सव को देखे और दर्शन से चुके नही । यही परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

**"पर्व" में सेवा यजमान महाविष्णु यज्ञ के पाटले हेतु**

२,५१,०००/-( ऋगवेद विभाग )
१,५१,०००/-( सामवेद विभाग )
१,००,०००/-( यर्जुवेद विभाग )
५१,०००/-( अथर्ववेद विभाग )

**समहू महापूजा**

२५,०००/-( प्रथम आवरण )
११,०००/-( द्वितीय आवरण )

**संहितापाठ**

१,२५,०००/-

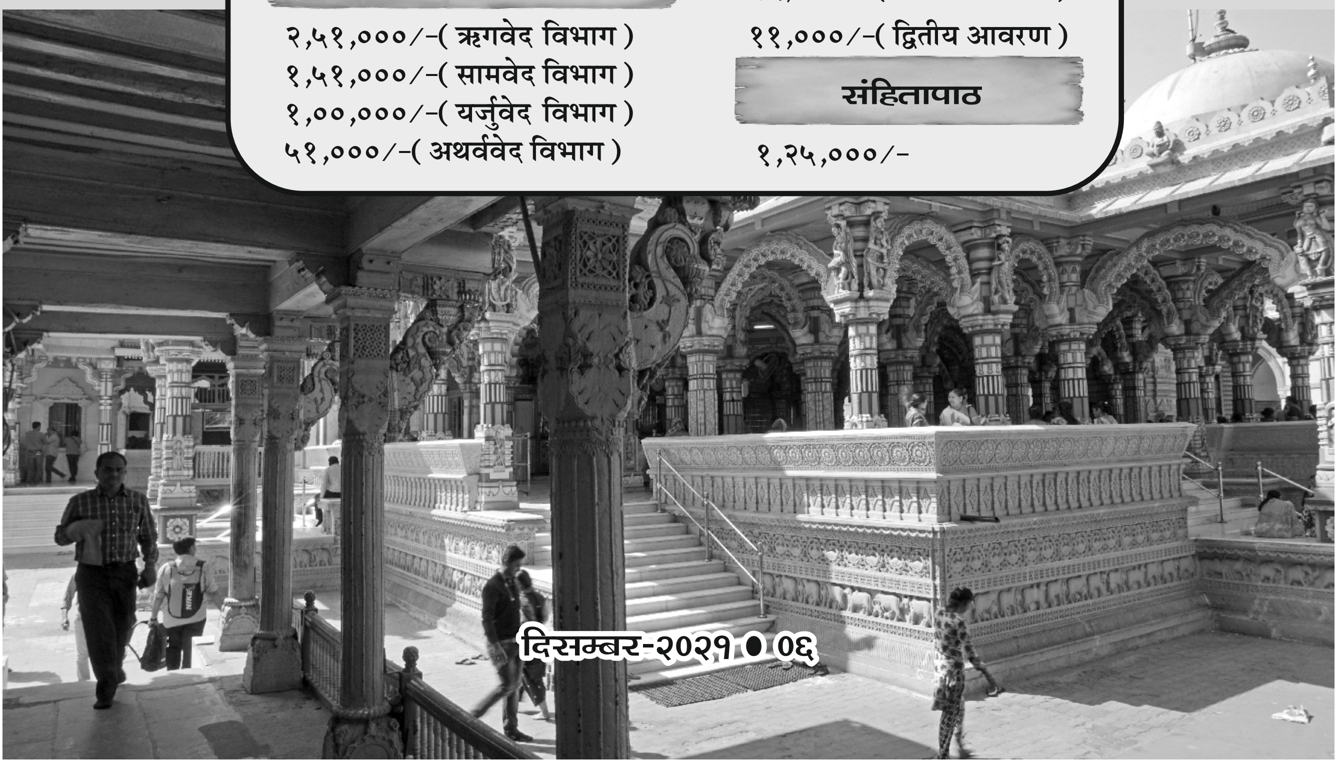

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अक्टूबर-२०२१)

## प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०२१)

१५ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४९ वे प्रागट्योत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री और अपने शुभ संरक्षण में संत-हरिभक्तो की शुभ उपस्थिति में पूर्ण हुआ।

(नवम्बर-२०२१)

३ असारवा और कालुपुर श्री हनुमानजी का पूजन आरती अपने करकमलो द्वारा पूर्ण की गयी।

५ नये वर्ष के परमकृपालु श्री नरनारायणदेवो की अन्नकूट आरती उतारने आये थे। अपनी बैठक में सभी को दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिये थे।

१६ श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करने आये थे।

१५ ४९ वे प्रागट्योत्सव प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में संत-हरिभक्तो की उपस्थिति में पूर्ण हुए।

(नवम्बर-२०२१)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री हनुमानजी का पूजन आर्ती महाराजश्री के करकमलो से पूर्ण हुआ.

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर प्रसादी की सभा मंडप में समूह चोपडा पूजन कर कमलो से पूर्ण किये।

५ नये वर्ष में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवो की अन्नकूट आर्ती उतारने पधारे थे। अपनी बैठक में सभी को दर्शन और आशीर्वाद दिये थे।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया ( रामबाग ) बाल स्वरुप कष्टभंजन देव के पाटोत्सव अवसर पर पधारे थे।

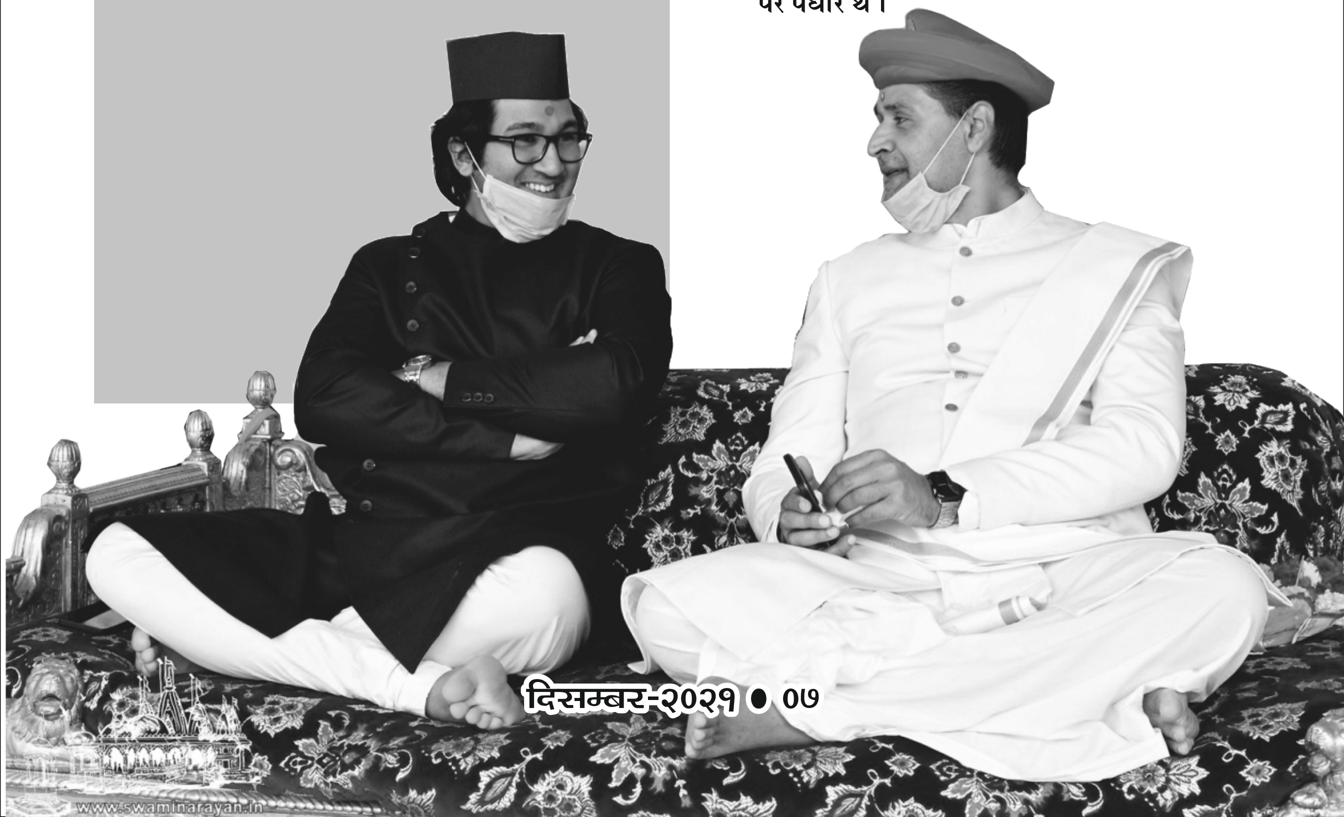

# बालस्वरुप कष्टभंजनदेव कांकरिया

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के सम्प्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर को अपने अधिकार मे लेकर अपने ही स्वरुप ऐसे नरनारायण भगवान के युगल स्वरुप की प्राण प्रतिष्ठा करके शुभ दिन को ( श्रीनगर ) अहमदाबाद शहर के चौरासी जातियो के मुख्य-मुख्य ब्राह्मणो को बुलाकर श्रीहरि बोले 'हे भूदेवो' श्रीनगर में निवास करने वालो को भोजन कराने की हमारी इच्छा है। इस लिये आप सभी आज से परम दिन अर्थात फाल्गुन सुदी पंचमी के दिन और चौरासी जाति के ब्राह्मण भोजन हेतु अवश्य पधारे । तभी ब्राह्मणो ने श्रीहरि से कहा कि इस नगर में ब्राह्मणो की चौरासी जातियाँ है। इनको एक दिन में भोजन कराने में सफलता नही प्राप्त होगी । उसके लिये सामान की पूर्व तैयारी करना पडेगा । तभी श्रीहरि बोले आप लोग भोजन करने की अनुमति दे । आप सभी भोजन सामग्री की चिंता नही करे । धर्मपुत्रे श्रीहरि के अमृत तुल्य वचन सुनकर सभी ब्राह्मणोने कहा कि यदि ऐसा है तो हम भोजन अवश्य करेगे । सभी भूदेव जाकर अपने-अपने समाज में स्वामिनारायण भगवान की बात को रखे थे । सभी ब्राह्मण समाज खुश हुआ था । वे घर-घर जाकर निमंत्रण दिये थे ।

श्रीहरिने आनंदानंद स्वामी को तथा लालदास गोरा बेचरदास, हिराचंद चोक्सी, मुलजी, लाधाजी, नथु भट्ट इत्यादि मुख्य हरिभक्तो को बुलाकर, व्यापारी के पास जाकर भाव-तौल निश्चित करके गेहूँ, चावल, घी, गुड, शक्कर, शाकभाजी, बर्तन इत्यादि लाने की आज्ञा दे दिये थे । सामान मंदिर में लाकर रख दिया गया था । वहाँ गंगामां रेवाबाई इत्यादि बाईयोने गेहू साफ करके उसके आटा तैयार कर दिये थे । तथा उसी दिन महानुभावानंद स्वामी के आज्ञा से कांकरिया सरोवर के किनारे बडा मंडप बांध दिया गया । उसमें सभी सामान लाकर रख दिया गया था । उस समय में श्रीनगर में पैतीस हजार ब्राह्मणो की संख्या तथा संत-हरिभक्तो की संख्या देखकर गुड, दाल, चावल, चना, मूँग, मिर्च, मशाला शाक-सब्जी का बड़ा भंडार बन गया था ।

फाल्गुन सुद चौथ के दिन ब्रह्म समाज अपने जाति कुल परम्परा के अनुसार मोढब्रह्म समाज के लिये अलग से चुल्हा लाना पडा था । जातियो के संख्या के आधार पर उन्हे संतोने बर्तन दिये थे । उस समय घी और गुड का भंडार देखकर ब्राह्मणो के मुख से पानी आने लगा था । ये लोग आपस में बात करने लगे कि स्वामिनारायण कोई रिद्धि-सिद्दी वाले दैवीय शक्ति वाले व्यक्ति है । इसके अलावा इतना ईकठ्ठा करना सरल नही है । यह कार्य चक्रवर्ती राजा भी नही कर सकते है । ऐसा कार्य उन्होने किया है । सद्‌गुरु आनंदानंद स्वामी व्यवहार कुशल थे । भूदेवो को सर्वप्रथम रसोई बनाने, का अवसर दिये थे । तथा श्रीहरिने सद्‌गुरु निष्कुलानंद

स्वामी को कई ब्राह्मणो के रसोई का अध्यक्ष बना दिये । सामान वितरण की जिम्मेदारी दे रखे थे । भूदेव अपने रसोई में लड्डु बनना शुरु कर दिये थे । चौथ की रात्रि में चौरासी रसोई में कई प्रकार के भोजन बनने लगे थे । इमली के घटादार पेड के नीचे हरिभक्तो रुके थे । कांकरिया तालाब के नैऋत्यभाग में बडे भाई रामप्रतापजी ते । रात्रि के समय श्रीहरि के लिये सुवासिनी भाभी भोजन बनाकर लाई थी । बड़े भाई के रहने वाले स्थान पर तीन हाथ ऊँचा मंच संतो ने बनाया था । वहाँ पर महाराज ने रात्रि विश्राम किये थे ।

कांकरिया सरोवर के चारो तरफ ब्राह्मण-साधु-हरिभक्त भर गये थे । वहाँ पर देशांतर से आये हरिभक्त सब में अपनी-अपनी रसोई तैयार कर रहे थे । फाल्गुन सुद पंचमी के दोपहर में पूर्वनियोजित सभी जातियो के रसोई में सेर-सेर भर के घी से पूर्ण लड्डु दाल-भात भजीया तथा पापड तैयार कर दिये थए । दोपहर के बाद सभी चौरासी जाति के सभी लोग भोजन करने लगे । उस समय की जनमेदिनी जैसे कुम्भ का मेला लगा हो ऐसा दृश्य था । अपनी-अपनी रसोई में पंगत लगाकर लोग बैठ गये । श्रीहरि वहाँ पर आये । ब्रह्मभोजन की पंगत तथा विप्र लोगो को प्रणाम किये । जिस तरह अमृतपान के लिये पगत बैठी थी . उस पंगत में विष्णु भगवान धुमे थे । उसी प्रकार श्रीहरि भी पंगत में चक्कर लगाये थे । जय-जय हर हर महादेव इस प्रकार त्रिपुण्डधारी तथा उर्ध्वपुंडधारी जय नमो भगवते वासुदेवाय श्रीनरनारायण भगवान की जय जय स्वामिनारायण भगवान की जय, ऐसा जय घोष कराके भोजन करने की अनुमति दिये . इसके बाद श्रीहरि माणकी घोडी पर बैठकर सभी भूदेवो की पंक्ति की परिक्रमा किये थे ।

इसके बाद श्रीहरि के बड़े भाई रामप्रतापजी महाराज के स्थान के सामने तीन हाथ उचे मंच पर बिराजमान हुए । तब महाप्रभु श्वेत पगडी श्वेत वस्त्र, तथा सुनहले तारो वाले वस्त्र पहने थे । चौरासी ज्ञाति के भूदेव भोजन करके सभी लोग श्रीहरि के पास आते थे । वे लोग मुठ्ठी भर भर चाँदी के सिक्के दान मे रख रहे थे । सभी भूदेव खुश थे । 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' बोलते हुए घर जा रहे थे । जिस पात्र में रुपा मुद्रा लाये थे । उसमें से चौतीसहजार ब्राह्मणो को अगणित मुद्रा दी गई थी । लेकिन वह पात्र थोडा भी रिक्त नही हुआ था ।

तत्पश्चात देश-देशान्तर से आये लोग मूर्ति प्रतिष्ठा के पूर्व हरिभक्त श्रीहरि की पूजा करने की ईच्छा व्यक्त किये थे । हरिभक्त एक-एक करके पूजन करते इसके बाद अपने नगर की तरफ प्रस्थान कर देते थे । काफी समय से अष्टसिध्धि-नवनिधि श्रीहरि के सेवा की प्रार्थना करते थे । वहाँ पर भव्य समैया किया या था । भूदेवो को भोजन कराके तृप्त किया गया था । तथा व्यापारी के सामान का मुल्य चुकाया गया था । फिर धन कम नही पडा था । अधिक प्रवृत्ति के कारण श्रीहरि उदास हो गये थे । उसके निर्वारण हेतु एक्रन्त में जेतलपुर होकर गणेश धोलका की राण में तीन-दिन रहे थे । इस तरह की लीला श्रीहरिने किया था ।

कांकरियाँ के दक्षिण भाग में रामप्रतापभाई का निवास था । वहाँ पर मंच पर बैठकर भूदेवो को दक्षिणा तथा रात्रि निवास किये थे । यह पावन प्रसादी का स्थल श्रीहरि के ऐश्वर्य सम्पन्न चरण रज से युगो-युगो तक सुरक्षित रहे । आदि आचार्य प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजीने उस प्रसादी के स्थंभ को बनवाया था । पुराणयुक्त पूजाविधि तथा विद्वान ब्राह्मणो द्वारा कुंड बनवाकर पाँच दिन तक होम-हवन कराके अपने कर कमलो द्वारा कष्टभंजन की प्रतिमा लाकर प्रतिष्ठित किये । वे बटुक वेश धारण करके नीलकंठवरणी सर्व प्रथम वड के वृक्ष के नीचे रहे थे ।

उस वट में हजारो भूत-प्रेत रहते थे। वे नीलकंठवर्णी को भयभीत करने लगे। उन्होने कुल देव हनुमानजी को याद किये। तभी कष्टभंजन वहाँ तत्काल आये थे।

**वळतो त्यां एरव दीठो वड,**
**पोते बेठा जई तेने थड।**
**कर्या नारायण वर्म जाप,**
**पछी समर्या हनुमान आप ॥**
**त्यारे वटुवेशे बलवंत,**
**आवी बेठा बड़े हनुमंत।**
**कर्यो कपितणो किलकार,**
**सुणी भागिया भूत अपार ॥**
**करी संध्याने ओटले बेटा,**
**लाव्या हनुमंत फल मीठा।**
**हवे ज्यारे सम्भारु तमने,**
**त्यारे सहाय करजो अमने ॥**
**त्यारे हसी बोल्या हनुमान,**
**धन्य समर्थ श्री भगवान।**
**तमे काल तणा महाकाल**
**तेनी हू शु करु रखवाल ॥**
**पण संभारसो स्वामी तमे,**
**थासे सहाय ते करशुं अमे ॥**

( भक्तचिंतामणी प्रकरण-२८ )

प्राण प्रतिष्ठा करते समय अयोध्याप्रसादजीने कहा था। जिस वटूक रुप में हमारे पिता स्वामिनारायण भगवान की सेवा किये। उसे वटुवेश धारी बाल स्वरुप कष्टभंजनदेव इस मूर्ति में रहकर हमारे सत्संग-सत्संगियो की सेवा करियेगा। इतना बोलते ही कष्टभंजनदेव के अंगो मे हलन-चलन होने लगा था। वे श्रीहरि का प्रसादी समझकर स्वीकार किये थे। वि.स. १८९२ कार्तिक सुद पंचमी के दिन प्राण प्रतिष्ठा करके समैया की गई थी। हजारो भूदेव भोजन ग्रहण किये थे। श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया, रामबाग पगला मंदिर में बिराजमान बाल स्वरुप कष्टभंजनदेव का प्रभाव हजारो में लिखा जाता है। आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के वचन से बिराजमान हनुमानजी सत्संग-सत्संगियो का रक्षण करता है। जो कोई भी व्यक्ति श्रद्धा के साथ लाभ पंचमी के दिन वर्ष में एकबार दर्शन करेगा उसके सभी कष्ट-दुख, दरिद्रता, चिंता शोक, का भंजन करके श्रीहरि की भक्ति की शक्ति प्रदान करते है। श्री नरनारायणदेव की स्थापना के १४ वर्ष बाद कष्ट भंजनदेव की प्रतिष्ठा की गई थी।

अयोध्या में हनुमान गड्डी में बिराजमान श्री हनुमानजी बालस्वरुप धर्मकुल के कुल देवता है।

---

### संस्कृत कालेज में "शिक्षापत्री भाष्य" पाठ्यक्रम में समावेश

श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वहस्त लिखित २१२ श्लोक वाली शिक्षापत्री सद्गुरु शतानंद स्वामी ने पुराणो-उपनिषदो-श्रुति, स्मृति, दर्श; जैसे तीन सौखास ग्रंथो के प्रमाण का संकलन करके शिक्षापत्री पर भाष्य लिखे है। जो वर्तमान समय में विश्व के ८० जितने देशो के भक्तो के घर में नित पठन किया जाता है। तथा असंख्य स्नातक बिद्यार्थी उसके मास्टर उपाधि प्राप्त कर चुके है। इस विषय पर संशोधन भी चल रहा है।

सभी सत्संगियो को बताते हुए आनंद हो रहा है कि श्री नररनारायणदेव पीठाधिपति परम पूज्य धर्मधुरंधर १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर धाम के महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रत्न से विश्व में संस्कृत भाषा की सबसे बड़ी संस्था श्री समपूर्णानंद विश्व विद्यालय - काशी ( वाराणशी ) के पूर्व मीमांसा विभाग और धर्म शास्त्र विभाग के विषयो में बेचलर - शास्त्री में अध्ययन करते विद्यार्थीयो के पाठ्यक्रम में शिक्षापत्री भाष्य मूल संस्कृत में पढना होगा। तथा संशोधन करने के लिये अध्ययन बोर्ड - संकायबोर्ड तथा विद्या परिषद में सर्वानुमति से स्वीकृत किया गया है।

# पर्व के साथ साथ

- अतुल पोथीवाला ( अहमदाबाद )

श्रीजी महाराज एकबार ददूका से मछीयाँव जा रहे थे । चैत्र महीने की दोपहर थी । सा थ में कई काठी दरबार भी थे । श्रीजी महाराज को प्यास लगी । दूर खेत में एक किसान खेत की सिचाई कर रहा था । महाराज माणकी घोडी को खेत की तरफ मोडे । और किसान से कहे ! ''पटेल पानी पिलायेगे ?'' किसान महाराज को देखकर आश्चर्य में पड गया था । वह तुरंत चरण स्पर्श किया । और बोला ''हाँ महाराज, आज ही दो नये मटके में पानी भरे हैं । लीजिये पूर्ण रुप से आप पान करे । महाराज आराम से पानी पीये । काठी भक्त भी प्रेम से पानी पीये थे । शरीर में शक्ति आयी । श्रीहरि किसान से बोले पटेल । आज हम तृप्त हो गये । जो माँगना हो माँग लो हम अवश्य देगे । किसान ने उतर दिया । आप के द्वारा सब कुछ मिला ही है । मेरा जीवन अच्छे से बीतता है । यदि देना है तो यह वरदान कि आप की यह मनोहर मूर्ति हमेशा हमे दर्शन देती रहे । महाराज तथास्तु कहे । किसान की निरावरण दृष्टि को प्राप्त किया ।

गाँव का एक अशिक्षित किसान । वह कब वचनामृत पढ़ा होगा । उसकी श्रीहरि के मूर्ति के प्रति अगाध निष्ठा थी । वह और कुछ न माँग कर श्रीहरि की मूर्तिरुपी चिंतामणी ही माँग लिया ।

श्रीनगर कहे जाने वाले अहमदाबाद के मध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री नरनारायणदेव है । यही मूर्ति कासन वरदान में माँग लिया था । तात्पर्य यह है कि श्री सहजानंद स्वामी की मूर्ति और मंद-मंद हास्य वाले श्री नरनारायण प्रभु की श्यामल मूर्ति में लेशमात्र अंतर नही है ।

पर्व यह श्रीहरि का पर्व है । यहाँ श्रीहरि अहमदाबाद के मध्य में कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारयण स्वरुप में प्रत्यक्ष रुप से अखंड बिराजमान है । अपने सभी समर्थ को श्रीहरि मूर्ति में लगाये है ।

श्री नरनारायण प्रभु के २०० वे पाटोत्सव के अवसर हेतु जगह-जगह धुन, सत्संग, कथा की गई थी । प्रत्येक विस्तार से अपनेमंदिर से पदयात्रा की जा रही है ।

अभी श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के प्रसादी सभा मंडप में ''श्री स्वामिनारायण'' महामंत्र की २०० घंटे की अविरत धून पूर्ण की गयी । प्रत्येक चार घंटे के बाद अलग-अलग विस्तार में वृद्ध भाई-बहन सभी लोग आये थे । तथा महामंत्र के जयघोष को जीवंत रखे थे । ढोलमंजीरा तथा खंजरी की आवाज कभी शांत नही हुआ था । श्री स्वामिनारायण महामंत्र के जाप से, लोग मंडप में रास खेल रहे थे । ताली बजा रहे थे । प्रत्येक व्यक्ति के रोम-रोम में भक्तिमय वातावरण हो चुका था ।

इस पर्व की प्राथमिकता यह है कि युवा भाई तथा युवती बहनो के लिये भी प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने अनेक कार्यक्रम किये है । पंचदिनात्मक ज्ञान यज्ञ महोत्सव जिसमें सांख्ययोगी बहनो द्वारा श्रीजी समकालीन स्त्री भक्त कथा तथा लड्डू उत्सव, हाटडी उत्सव, का प्रोग्राम किया गया था ।

अभी तक जो महोत्सव हुए है । उसको देखते हुए आज की युवा पीढी पूरे मनोयोग से भाग ले रही है । पर्व

की तैयारी में लगे हुए है। तथा पूर्व तैयारी में जुड गये है।

सत्संग के लिये हंमेशा क्रियाशील रहना चाहिए। इससे बड़ा दूसरा कोई ''भक्तियोग'' नही है।

पर्व की पूर्व तैयारी देखकर निश्चित रुप से एहसास होता है कि अभी युवा पीढी सही रुप में श्रीहरि के सत्संग में भाग ले रही है। विविधलक्षीय पर्व की प्रवृत्तियो की विशेषता है। इससे श्री नरनारायण प्रभु की महिमा समझते है। संतो और सांख्ययोगी के सानिध्य में प्राकृतिक दोष धीरे-धीरे दूर हुआ है। सबसे बडी बात यह है कि हम सब को सबसे प्यारी श्रीहरि की मूर्ति मिली है। इसका हंमेशा एहसास होता रहता है।

आईये हम सब पर्व के अनोखे भक्तियोग में जुड जाये।

## धर्नुमास का विशेष सत्संग

### दि. १६-१२-२०२१ से दि. १४-०१-२०२२

**परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्यम में धर्नुमास धुन महोत्सव**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री औरर प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा और पूजनीय संतो की उपस्थिति में और हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालेश्री शुभ सानिध्य में धनुर्मास मनाया जायेगा। पूरे महीने भर ठंडक वाले समय में अपने आराध्येदव श्री स्वामिनारायण भगवान के महामंत्र का जप करना अपने को सद्भाग्य से मिला है। यह एक अवसर है जहाँ पर भगवान को नाम और समय साहिणी दोनो निश्चित होती है। प्रातः उठकर धुन में लोग लग जाते है। भक्त और यजमान बनने का लाभ भी मिलता है।

वर्तमान समय में कोरोना महामारी होने के कारम सरकारश्री के नियमानुसार मास्क पहनना अनिवार्य तथा सामाजिक दूरी बनाये रखना आवश्यक है।

– महंत स्वामी

### पूर्णिमा के दिन जेतलपुरधाम में पार्किंग व्यवस्था

जेतलपुरधाम में पूर्णिमा के दिन दर्शनार्थियो के लिये गाडी पार्क करने के लिये अद्यतन सुविधा वाला श्री स्वामिनारायण मंदिर से २०० मी. पहले सर्विस रोड से जुडा विशाल ३०० गाडियो की पार्किंग व्यवस्था है। व्यवस्था के भाग रुप में वाहन सुरक्षा के लिये दर्शन हेतु आने वाले हरिभक्त पार्किंग में वाहन रखकर दर्शन करे।

जेतलपुर गाँव और रास्ता के उपर जाने वालो के मध्य ट्राफिक का धर्षण होता था। कृपया मंदिर में वाहन लेकर नही जाये। यह सब से आग्रह है। रात्रि काल में प्रकाश और सुरक्षा की व्यवस्था की गई है। जिसको सभी सत्संगी ध्यान पर ले।

( महंत स्वामी श्री स्वामिनारायण मंदिर-जेतलपुरधाम )

# श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से आशीर्वचन-संक्षिप्त

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापूनगर )

**प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४९ वे प्रागट्योत्सव के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर (ता. १५-१०-२१)**

**प.पू. बड़े महाराजश्री :** हमारे लिये यह दिन अति महत्वपूर्ण है। इस दिन हमको श्री नरनारायणदेव ने आचार्य महाराजश्री की भेट दिये हैं। मुझे याद है हमारी शादी के समय इसी सभा मंडप में सभा की गई थी। उस समय मैं गद्दी पर अकेला बैठा था। तभी वैष्णवाचार्य श्री व्रजरायजी महाराजने कहा मैं इस गद्दी पर युगल युवक स्वरुप को ही देखा हूँ। इसके बाद २ वर्ष पश्चात महाराजश्री का जन्म हुआ था। उनकी वाणी सत्य हुई। हम लोग के लिये सबसे बडे ज्योतिषी यदि कोई है तो वे श्री नरनारायणदेव है।

महाराजश्री अहमदाबाद देश की गद्दी पर बैठकर उत्तर क्षेत्र का कमान सम्भाल रहे है। इसमें दो मुद्दे हमको अच्छे लगते है। अलग-अलग हरिमंदिर का समावेश होता है। अेक अलग-अलग ट्रस्ट थे। उन सबको नरनारायण की छत्र छाया के नीचे लाकर एक ट्रस्ट में विलय कर दिये। अभी यह कार्य चल रहा है। दूसरे प्रबन्धकीय व्यवस्था में पारदर्शिता लाये है। इससे नरनारायण की तिजोरी अधिक समृद्ध हुई है।

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद देश के संचालन के विषय में एक ऐतिहासिक विषय की स्पष्टता करते हुए। जेतलपुरधाम के महंत पू. पी.पी. स्वामी ने बताया है कि इ.स. १९४७ में जब लोकतंत्र आया। उस आधार पर श्रीजी महाराज ने देश विभाग के लेख के आधार पर अपनी मंदिर की योजा बनाई गई थी। तभी आचार्यश्री संचालन के प्रमुख बनाते गये थे। इ.स. १९६२ में जब देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री गद्दी पर थे। तब नही सिविल के लिये चेरिटी कमिश्नर ने अनुदान माँगे थे। उस समय के स्कीम कमेटी के सदस्यो ने अनुदान न करने के कारण चेरिटी कमिश्नरने सिविल कोर्ट में नही स्कीम का दावा किये थे। श्रीजी महाराज देश के आचार्य के साथ सदैव रहे। २० अगस्त को सुप्रिम कोर्ट के तीन जजो के खंड पीठ ने अपने देश विभाग के लेख अनुसार निर्णय देकर महाराज की सभी सत्ता वैसे ही प्रदान की तथा उसमें कुछ और भी जोडा कि इसमें अब परिवर्तन कोई व्यक्ति नही कर सकता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री अधिक स्पष्टता करते हुए १९६२ में अहमदाबाद और वडताल दोने देशो की स्कीम सुधारने का दावा हुआ था। वडताल का निर्णय शीघ आ गया। अपने यहाँ वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री तक अहमदाबदा देश की सम्पत्ति आचार्य महाराजश्री की व्यक्तिगत सम्पत्ति है। दादा उस समय सभी सम्पत्ति ट्रस्ट को देकर इस कारण से आचार्यश्री मालिक से ट्रस्टी बने थे।

आचार्यश्रीने संस्था को सब दे दिया था। अर्थात् संस्था आचार्यश्री को मकान, गाडी इत्यादि का निर्वहन करती है। अपना निर्णय ६० वर्ष के बाद आया है। क्योकि आचार्य के विरुद्ध कोर्ट में कोई साक्ष्य ही नही था। निर्णयानुसार अहमदाबाद देश की परम्परा चालू रहेगी। आचार्यश्री स्कीम कमेटी के प्रमुख **(President)** रहेगे। मंदिर के महंत की नियुक्ति तथा बदलाव की सत्ता उनके पास हमेशा बनी रहेगी।

**प.पू. लालजी महाराजश्री :** पर्व के उपलक्ष्य में गाँव-गाँव में सभा, धुन चालू है । दिवाली के बाद दो कार्यक्रम पर भार देना है । गाँवमें जो कृषक हरिभक्त है । उन्हे आर्गेनिक खेती करके कम जमीन से अधीक लाभ प्राप्त करे । ऐसा विदेश के किसान करके लाभ ले रहे है । अपने किसान इस तकनीक का लाभ उठाये । यह प्रयास हमे करना है । पाटण के एक किसान को सात बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है । इस किसान से बहुत कुछ सीख सकते है । दूसरा गादीवालाश्री और श्रीराजा के मार्गदर्शन में गाँव-गाँव में बहने हैन्डीक्राफ्ट में भाग लेकर सुखी बने । ऐसा प्रयास भी करना है ।

**प.पू. महाराजश्री :** अब किसी के लिये छोटा-हरिभक्त शब्द नही प्रयोग करे । क्योकि नरनारायणदेव के प्रांगण में आये वे बडे है । इस लिये कोई छोटा नही है । शीदनो भक्तो को मतंपथ मा रेलोल... नंद संतो के शब्द है । हम सभी देव के चरणो में बैठे है । देव के कारण हम सभी है । आचार्य का स्थान एक पद है । व्यकति नही है । इस पद का गौर वहै । बापजीने इस गद्दी पर दो बात की है । तीन बैठे तो क्या कष्ट है ? हमारे मध्य मित्रता का आनंद है । परम्परागत मित्रता गरिमा और आधर चला आ रहा है । एक आनंद है । आज के मध्य रहने की एक मजा है । इसलिये मैं बचपन से गाँव में धुम रहा हूँ ।

जीवन में यदि कोई महत्वपूर्ण और आवश्यक विषय है तो वह जीवन में देव की प्रधानता की कमी न होये । जिन्होने देव के साक्षात भाव का दर्शन किया है । वह कही अन्य भटकता नही है । इस देव की क्या बात करे । ऐसेदे व कही नही मिलेगे । महाराजने अपने संज्ञान में प्रतिष्ठित किये है । नरनारायणदेव की जय हम नही कर सकते है । देव की जय तो है ही । उस कारण से अपनी जय होती है । इससे अपना पूर्ण होता है ।

यहाँ पर आये सभी को मैं पहचान रहा हूँ । आप सभी घर के है । स्थायी भी है । लेकिन इससे पूर्ण नही होने वाला है । निष्ठा के विना सब अधूरा है । सच्चा गृहस्थ उसे कहेगे तो अपना उत्तराधिकारी प्रदान करें । यदि नही तो मंदिर बनाने से क्या लाभ ? आने वाले पीढी को पकडना कठिन है ? महाराज के सिद्धान्त को जितना छोडेगे । उतनी ही हानि होने वाली है । इस बारे में प्रत्यक्ष देखे है । महाराजने कहा है कि हमारी आज्ञा का उल्लंधन हंमेशा कष्टदायक ही होगा । यह एक लालसिगरत है । अच्छे रहकर हमारा उद्देश्य सपल करे । महाराज सभी को जानते है । कौन कैसा है ? महाराज यदि साक्षात् आकर यहाँ खडे रहे तो हम सभी की दशा खराब हो जायेगी ! भले शब्द पर वजन देना आवश्यक है । कर्म क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन, आज शहर छोडकर गाँव में खेतीक रने का समय आ गया है । अंत में यही करना है । यह परम्परा छोडना नही है । समाप्त होने पर देगे क्या ? रुपया तो ले लेगे । रुपया की बात नही है । भगवान के प्रति निष्ठा सवाया होता है । ऐसा वातावरण हमे देना है । मैं पहले भी कह चुका हूँ कि दस मंजिल के मकान सभी लोग बना सकते है । लेकिन परिवार कितना बना सकते है ? यह नरनारायणदेव के परिवार है । हमे उसका गौरव है । खुमारी है । देश-विदेश में अपने कितने मंदिर है । प्रत्येक मंदिर में सुख-शांति है । प्रदक्षिणा में शांति से सोचे हरिभक्तो को हमने देखा है । शांति के कारण नींद आयी होगी । कई लोगो को ५ टन ए.सी. में भी नींद नही आती है । पूरे रात जागते है । कोरोना काल में कैसा रहा था ? किसी विषय की चिंता नही करना चाहिए । सत्संग का घटना-बढना यह नरनारायणदेव की कृपा से होता है । यह महाराज के शब्द है । शिक्षापत्री में क्या लिखा है । यह सबको पता है । फिर भी महाराज के आज्ञानुसार हम

लोग प्रतिदिन पाठ करते है क्यो ? दिमाग से नही निकले इस लिये ? बाहर जाने पर सब कुछ भूल जाते है । हम लोग शेर है इस लिये स्वाभिमान हमे रखना चाहिए । आप सभी नजदीक के है । हम लोगो की खुशी और हँसी देखकर कुछ लोग परेशान हो जाते है । उन्हे खुशी नही मिलती है । दिनेशभाई अपने ट्रस्टी है । फिर भी सामान्य हरिभक्त के मध्य बैठकर बोजन करते है । कालियाणा के डाह्या काका सर्व प्रथम धर्मादा की आखक की योजना तथा स्वामिनारायण मासिक अंक के सदस्यो की संख्या बढाने का काम किये है । मोबाईल की संख्या बढ गयी है । उसका उपयोग माप में करे । सदुपयोग करे । भगवान को जीवन में आगे रखे । इससे अपना कदम आगे बढता है ।

कच्छ से भी भक्त आये है । अपना सत्संग एक है । हम सभी एक तार में बंधे है । हर जगह समस्या है । हम सभी आनंद कर रहे है । उसका श्रेय नरनारायणदेव का है । देव के चबूतरे पर रहकर महाराज बोले है इसमें और हमारे में कुछ बदलाव नही है । दूसरी जगह बदलाव हुआ है । यहाँ पर आचार्यश्री परिवर्तन नही करने दिये है । दोनो देश के आचार्य कोई भी रहे हो । २१२ श्लोक का २१३ श्लोक नही हुआ है । काफी लोग पूछते है कि दान कहाँ पर दे ? महाराज स्पष्टता करने में छोडे नहीं है । महाराज जैसा कहे हे वैसा ही करना चाहिए । किसी समय गलत बात नही करना चाहिए । मैं ऐसा ही मानता हूँ गलट बात करने पर उपवास करना चाहिए । हमें ऐसा उपवास करना ही नही है । देव का कार्य करना चाहिए । यह गोधावी के बापू एक परिवार ने पूरे गाँव का सत्संग सुरक्षित रखे है ।

आज हमारा जन्म दिन है । ऐसा कहा जाता है । द्विन जब जनेउजारण करता है तो उसका दूसरा जन्म माना जाता है । हमारे दृष्टि में जब भगवान की प्राप्ति हो, पहचान हो, साक्षात् भाव का ज्ञान हो निष्ठा हो, बाकी तो लोग कई है । बाहर फाफडा-जलेबी खाते होगे । ( यह पीले टी शर्ट वाले ( युवक मंडल ) सभी को अपने मंदिर ने नरनारायणदेव का सुंदर लोगो बनाकर दिये है । टी-शर्ट का रंग बदल देह में कंगाल क्यो रहना चाहिए ?) कई लोग अलग समूह बनाकर आशीर्वाद देने निकले है । जेब खाली है । बैलेन्स न होने पर चेक बाउन्स हो जाती है । आशीर्वाद सीधे देव से सीधे ले जाये । पर्व के उत्सव में आप सभी यजमान है । मालिक हो । कोई मेहमान नही है । ये देव अपने है । आप देव का बनकर रहे । इससे हम आप के रहेगे । अपने बेटे-बेटीयो को आप इस देव को प्रदान करे । तो सब कुछ दिये है । ऐसा आप माने । पैसा तो स्वत: ट्रान्सफर हो जाता है । बेटा यदि अच्छा है तो उसके लिये पैसा इकट्ठा करना आवश्यक नही है । बेटा खराब हो तो भी घन नही दिया जा सकता है । यही अच्छे मनुष्य की पहचान होती है । ऐसी कहावत भी है ।

---

### सम्प्रदाय के गौरव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान आश्रित और् प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. नटुभाई पटेल ( एल.ए. केलिफोनिया ) विगत कई वर्ष से वहाँ पर हिन्दु धर्म के त्योहार नवरात्रि पर्व में गरबा महोत्सव का आयोजन करते है । साथ ही साथ अपनी संस्था से भी जुडे है । जब अपने मंदिर का निर्माण हो गया तब श्री नरनारायणदेव की कृपा से धर्मकुल के संकल्प से अपना भव्य मंदिर का निर्माण हुआ था । जिस में ये अधिक सक्रिय थे । उनकी इस उत्कृष्ट और निस्वार्थ सेवा के कारण अमेरिकन हिन्दु फेडरेशन ने उन्हे हिन्दु ह्मैनिटी एवार्ड २०२१ दिया गया है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री ने भी उनकी ऐसी सेवा की प्रवृत्ति से अति खुश हुए ।

## अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

# महेसाणा

रेलवे द्वारा
अहमदाबाद से दिल्ली रेलवे लाईन पर महेसाणा जक्शन आता है।
बाय रोड –
अमहादाबाद से १ घंटे ३ मिनट,
एअरपोर्ट से १ घंटे और २३ मिनट

संकलन : प्रफुल खरसाणी

**महेसाणा मंदिर :-**

अहमदाबाद से दिल्ली रेलवे मार्ग पर महेसाणा जक्शन आता है। महेसाणा जिला है। यह शहर प्राचीन किले से सुरक्षित है। यहाँ पर दूधसागर डेरी है। यह डेरी विशाल और देखने योग्य है। अहमदाबाद से एस.टी. बस द्वारा भी महेसाणा जा सकते है।

यहाँ के प्राचीन मंदिर संवत १९७२ के आसोवद-५ के दिन मूर्ति प्रतिष्ठित की गई थी।

श्रीहरि जब भी दंढाव्य देश में विचरण करते थे। तब इस गाँव में आये थे। और कलुशीबाई के घर संतोने खीचडी का दातण कराये थे।

बहनो का सुंदर मंदिर यहाँ पर है। मेडा के उपर है। घनश्याम महाराज की बड़ी मूर्ति तथा दाहिने धर्मदेव और बाये भक्तिमाता की मूर्ति स्थित है। इस मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करमकमलो द्वारा संवत २०२९ महावद-१२ वी के दिन हुआ ता। यहाँ पर बहनो का घनश्याम मंडल चलता है। बहनो का सत्संग अच्छा है।

वर्तमान समय में महेसाणा में पांच शिखर बद्ध भव्य मंदिर हाइवे उपर सोभा बढा रहा है। जिस में २००८ में प.पू. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री श्री वृन्दावदन विहारी श्री घनश्याम महाराज और श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा किये है।

महेसाणा मो भगवान स्वामिनारायण दंढाव्य देश में आये प्रसिद्ध महेसाणा गाँव में पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान ने कई बार आखर भूमि का अपने चरणो से पवित्र किये है। साथ ही साथ संत तथा ब्रह्मचारी और पार्षद भी श्रीजी महाराज के साथ उस गाँव में आकर भूमि को पवित्र किये है। श्रीहरि जब वडनगर – विसनगर प्रवास में रहते थे।

तब-तब महेसाणा होकर जाते थे ।

एकबार श्रीहरि बामणवातामक गाँव से महेसाणा गाँव में पधारे थे । महेसाणा में रहने वाले भाविक भक्त कलशीबा नामक की ब्राह्मण स्त्री हरिभक्त थी । कलशीबाई का इतिहास कुछ ऐसा है । नारदीपुर के भूदेव महेता नियमित रुप से कुम्भ मेला दर्शन जाती थी । उनसे प्रभावित होकर भगवानने दिव्य दर्शन देकर बोले आप के यहाँ साक्षात् गंगाजी और कुम्भ अर्थात् कलश कुंवर का जन्म होगा । ये गंगाबा अर्थात् जेतलपुर वाली गंगाबा और उनकी बहन कलशकुंवरबा नाम का अपभ्रंस होकर कलशीबा कही गयी । ये कलशीबा श्रीहरि तथा संतो, पार्षदो को अपने घर ले गई थी । इसके बाद कलशीबा प्रेम भाव से पूजा की थी । संत लोग मधुर स्वर से कीर्तन करके श्रीहरि की कृपा प्राप्त किये थे । इतने माँ शायंकाल हो गयी । कलशीबाने श्रीहरि तथा संतो को भोजन के लिये खिचडी बनाने का कच्चा सामान दे दी । तथा खीचडी खाने के साथ घी की मटके को दी थी । इसके बाद श्रीरिने मुकुंद व्रणी के पास खीचडी बनाकर महाराजने खीचडी में आधा घी डाल दिये । शेष घी सब्जी में डाल दिये । खिचडी और सब्जी खाये थे । सभी संतोने खिचडी खाया । शेष खीचडी को ढ़क कर सभी लोग सो गये थे ।

प्रातः होने पर श्रीहरि तथा संतो-पार्षदो चलने के लिये तैयार हो गये । तब वृद्धाने कहा हमारे अन्न का नाश क्यो कर रहे हो ? महाराज सभी से बोले अब आप लोग पंगत में बैठ जाइये । तभी महाराज से सभी लोग कहे कि महाराज, दातून भी नही किये है । स्नान भी नही किये है । पूजा भी नही किये है । तो भोजन करने कैसे सीधे बैठ जाये ? तभी महाराजने कहा कि दातून या नहाने की आदत को शरीर को होता है । आत्मा को क्या तकलीफ है ? प्रत्येक को आज्ञा देकर खीचडी खिलाये । बाद में महाराज-संत पार्षद वहाँ से दूसरे गाँव की तरफ प्रस्थान किये थे ।

इस प्रकार श्रीहरि कलशीबा को भावपूर्ण करके उन्हे अपने दर्शन का लाभ दिये थे । कलशी बा के घर श्रीहरि तीन बार आये थे । कलशीबा अगल०बगल के गाँवो में धुमकर सत्संग कराई थी ।

श्रीहरि मेहसाणा में पधारे उस विषय में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने ''भक्तचिंतामणी'' ग्रन्थ के प्रकरण ६४ में कडी ११ में लिखे है ।

**तिया जमाड्य ब्राह्मण घणा, करी मोढक मिसरितणा ॥**
**त्याथी गया उंझे मेहसाणा, तियांजनेने जमाड्य पराणे ॥११॥**

तथा महेसाणा के भक्त का नाम भी स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ''भक्तचिंतामणी'' ग्रन्थ में नीचे प्रमाण से मिलता है । प्र.-११९ कडी-५५

**नरसी भक्त भावसार, मूलचंद ए जन उदार ॥**
**द्विज भक्त छे कलशीबाई, अेहादि जन मेसाणामाई ॥५॥**

इस तरह श्रीहरि जब-जब महेसाणा पधारे थे । तब-तब नके आश्रित सेवा करके खुश होते थे । श्रीहरि इस प्रकार मेहसाणा गाँव को अधर्म से दूर करके धर्म की स्थापना करके भक्तो को अविनाशी सुख देकर अपने धाम को परायण किये थे ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

## श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची

### अक्टूबर-२०२१

दि. १७-१०-२०२१ (प्रातः) प.भ. पटेल नरेन्द्रकुमार कांतिलाल - राणीप

(शायं) प.भ. अरविंदकुमार शांतिलाल वाघेला

दि. २०-१०-२०२१ प.भ. हर्ष दर्शककुमार शुक्ल - नारणपुरा - ह. ख्याति शुक्ल

### नवम्बर-२०२१

दि. १२-११-२०२१ सांख्ययोगी रतनबेन रवजीभाई - हिरापर - कच्छ

दि. १४-११-२०२१ प.भ. मनजी शिवजी हिराणी - यु.एस.ए.

दि. २१-११-२०२१ (प्रातः) प.भ. चेतनभाई गोरधनभाई पटेल - पोरवाले - साबरमती - ह. अंजनाबेन

(११ बजे) प.भ. प्रहलादभाई मणीभाई पटेल - बिलियावाले - वडोदरा

(शायं) अ.नि. कचराभाई खुशालदास पटेल शिष्य मंडल - विसनगर

दि. २५-११-२०२१ अ.नि. छगनभाई पुरुषोत्तमदास पटेल के पुण्यतिथि के अवसर पर (विहारवाले) - ह. बाबुभाई छगनदास पटेल - साइंस सीटी

दि. २८-११-२०२१ (प्रातः) अ.नि. कश्मीराबेन उदयनभाई महाराजा प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर - विसनगर।

(शायं) प.भ. गोमतीबेन रमेशभाई पटेल - डांगरवावाले - यु.एस.ए.

## श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि

### अक्टूबर-२०२१

रु. १,५१,०००/- अ.नि.प.भ. नंदलालभाई कोटारी (भालजा मंडल अडमदाबाद) की ८ वी पुण्यतिथि के निमित्ते - रुचि वाले हरिभख्तो की तरफ से

रु. ५१,०००/- प.भ. दिनेशकुमार माणेकलाल पटेल - राजपुर - कडी

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

# भक्तिसुधा

**(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जो भी कार्य करो वह परमात्मा के संरक्षण में करे"**

**( संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर )**

भगवतगीता है । उसी प्रकार उद्धव गीता है । उद्धव गीता के अन्दर उध्धव का भगवान के प्रति कई प्रश्न है । जो हमें ज्ञान प्रदान करता है । उद्धव जी श्रीकृष्ण भगवान के रथ के सारथी थे । वे भगवान की सेवा किये । वे कभी भी किसी वस्तु की माँग उनसे नही किये । एकबार कृष्णजी उद्धव को बुलाकर पुछे हमने सबकी इच्छा पूरी की है । तो आप भी कुछ मांगे ? तो भी उद्धवजी कुछ भी नही माँगे । लेकिन उद्धवजी का शंका निवारण प्रश्न था । उन्होने कृष्णजी से पूछा आप जो संसार को उपदेश दे रहे है । और व्यवहारिक जीवन में जो करते है । इन दोनो में अन्तर दिखाई देता है । आप इसमें से अधिक प्रयोग में नही लाते है । जो हमे दिखाई देता है । इसका हमें निराकरम चाहिए । उद्धवजी का प्रश्न यह था कि महाभारत मात्र जुआ केलने के कारण हुआ था । पूरे परिवार का विनाश भी हुआ था । पुरी सृष्टि को भुगतना पडा था । आप तो अन्तर्यामी थे । भूत-भविष्य वर्तमान सभी का ज्ञान आप के पास था । आपने जिस मित्रता का वर्णन किया है । उस तरह आप का व्यवहार नही था क्या ? पांडव अपने मित्र थे । उनका आप पर पूर्ण विश्वास था । तो सच्चे मित्र की व्याख्या क्या है । जो संकट के समय में साथ हो । गलत मार्ग पर जाने पर रोके आप क्यो नही रोके ? आप चाहते तो रोक सकते थे । आप को सब कुछ ज्ञात था । क्यो नही रोके ? खेल के समय युधिष्ठिर के पक्ष में क्यो नही रहे ? पासा क्यो नही बदल दिये ? भाग्य क्यो नही बदल दिये ? युधिष्ठिर राज्य हार गये । द्रोपदी को दाव पर लगा दिये । द्रोपदी के विवशता पर ही क्यो आये । तब भगवान ने उतर दिया कि प्रत्येक वस्तु का नियम होता है । इस पृथ्वी पर मनुष्य अपने कर्मो के द्वारा संचालित होता है । में दर्शन की तरह बैठकर देखता हूँ । अपना कर्म करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र होता है । लेकिन कर्म फल की प्राप्ति हेतु स्वतंत्र नही है । यह सब प्रकृति के नियम से बंधा हुआ है । तो उद्धव जी बोले कि जब संकट आये तब आप को बुलाये तो आप आयेगे ? क्या उससे पहले आप को आ नही जाना चाहिए । मित्र को बुलाने पर ही आना चाहिए । तब कृष्ण भगवानने उत्तर दिया कि ये लोग मुझसे क्या कहे थे । मुझसे प्रार्थना करके कहे थे कि जब-तब हम लोग आप को न बुलाये तब-तक कक्ष में निही आये । उन लोगो को विश्वास था कि खेल हम जीत जायेगे । फिर भी हम तैयार थे । भगवान बोले हारने का कारण क्या था ? वह थी विवेक शून्यता ! जिसके पास विवेक नही विजय प्राप्क्त करता । खेल खेलते समय दुर्योधन विवेकी ता । उसे अपने पास का ज्ञान नही था । इस लिये शकुनि मामा को खेलने के लिये बैठाया था । युधिष्ठिर भी चाहते तो मुझे अपनी तरफ से मुझे खेलने के लिये बुलाते । मैं और शकुनि सामने बैठकर खेलते तो जीत

किसकी होती ? लेकिन मुझको तो कक्ष के बाहर खडे रहने के लिये बोल दिये थे । जब मनुष्य के जीवन में अज्ञान रुपी आवरण आ जाता है । तब मानव भूल जाता है । उद्दवजी बोले कि मानव पाप कर्म करता रहे और आप उसको देखते रहे । भगवान बोले हमारे कथन में जो रहस्य है उसे समझे ।'' जो भी कर्म करे परमात्मा के संरक्षण में करे ? अर्थात् आज्ञा में रहकर करे । थोडा विचार करे जो मैं करुगा अच्छा ही होगा । लेकिन मोह रुपी आवरण में मानव भूल जाता है । भगवान हमारे अंदर बैठकर सब कुछ देख रहे है । दुःख पडने पर जाग्रत होते है । द्रौपदी चीर हरण के समय पूरी शक्ति लगा दी थी । शक्ति समाप्त होने पर भगवान की पुकार लगायी । मानव जीवन में अज्ञानता आ जाती है । तब पतत प्रारम्भ हो जाता है । जिस कार्य को भगवान के संरक्षण में किया जाता है । उस में कष्ट नही आता है। इस लिये अपने चित्त में २४ घंटे महाराज को रखेगे तो मुस्किल समय भी समाप्त हो जाता है । हम अपने चालाकी में दुनिया दारी में को जाते हैं । जब हमको ज्ञान हो जाता है तो गलत कार्य नही करते है । बच्चे गलत करते है बदमाशी करते है । कब करते है ? जब आप उपस्थित नही रहते है । क्यो उन्हे जात है आप गुस्सा करेगें । उसी प्रकार हम भूल जाते है कि हमारे अन्दर बैठे हुए देखते है । ऐसा हमे शोभा नही देता है । याद होने पर भी गलत क्यो हो जाता है । मनुष्य अपने स्वभाविक दोष को स्वीकार नही करता है । हमारे अंदर क्रोध, सम्मान, माया, लोभ सब अपने अंदर में ही है । यह सबको पता भी चलता है । लेकिन अंदर के दोष को मनुष्य छिपाता है । अपना दोष खोलने में सबको शर्म आती है । सभी शक्ति इनको छिपाने लगा देते है । क्रोध को बाहर नही आने देते है । तथा शांत रहते है । दोष छिपाने में हम कपटी भी हो जाते है । यह शक्ति भगवान को हृदय में रखने के लिये करे तो काम अच्छे से पूरा हो जाये । आप बगल में बैठी अपनी बहन को धोखा दे सकते है । लेकिन अंदर बैठने वाला सब कुछ देखता है । कई वर्ष बीत जाने के बाद कपट बाहर आता है । कहने का अर्थ यह है कि व्यक्ति को अपने दोषो को स्वीकार करना चाहिए । अपने दोषो को भगवान के सामने अवश्य प्रगट करे । भगवान से प्रार्थना करे । मुझमें इस तरह का दोष है । हममें सुधार हो । इन दोषो से बाहर निकल जाऊ । ऐसी शक्ति तथा सहायता दे । दोनो हाथ जोडकर प्रार्थना करे । भगवान आप का प्रारब्ध भी बदल सकते है । महाराज कितने दयालु है । छोटे-बच्चे की तरह निखालक होने पर आपको कल्याण हो जायेगा । जीवन पार दर्शक होना चाहिए । तो रात्रि में अच्छी नींद आयेगी । आप के अंदर की शांति सबको सामान्य कर देगी । इस लिये छल-कपट से दूर रहे । प्रत्येक कार्य में महाराज को याद रखे । तो अपने-आप कोई गलत कार्य नही होगा ।

---

**श्री स्वामिनारायण अंक नही मिलने पर**

अपना श्री स्वामिनारायण मासिक प्रत्येक महीने के ११ तारीख को सावधानीपूर्वक पिनकोड तथा जिलावार छाँट कर पोस्ट किया जाता है । फिर भी कई लोगो को अंक समय पर नही मिलता है । ऐसी शिकायत प्राप्त होती है । जो भी शिकायत है वह पोस्ट आफिस की है । इस लिये जिसे अंक न मिले उसे २० तारीख के पश्चात कार्यालय को ग्राहक संख्या बताकर नजदीक के पोस्ट ओफिस में शिकायत लिख कर देनी चाहिए । तभी समय से आप को अंक प्राप्त होगा ।

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

# મકર સંક્રાંતિ (ઉત્તરાયણ) પુણ્ય પર્વ પ્રસંગે અલૌકિક દાન પુણ્ય

આપણો ભારત દેશ ધર્મપ્રધાન દેશ છે. દરેકને પોતપોતાનો ધર્મ-સંપ્રદાય પાળવાનો સ્વતંત્ર અધિકાર છે. આપણા દરેક પર્વ-ઉત્સવનું અનેરૂ માહાત્મ્ય અને મહિમા હોય છે. તેમાંય ૧૪ મી જાન્યુઆરીના દર વર્ષે આવતું ઉત્તરાયણ પર્વ એટલે મકર રાશીમાં સૂર્યનારાયણ ભગવાનનો પ્રવેશ એટલે સંક્રાંતિ કાળ એ શુભનું મંગળકારી આગમન, દરેક પ્રકારના દાન પુણ્યમાં અનેક ઘણો ઉમેરો કરતો હોવાથી આ શુભ દિને પુણ્ય સ્થાનક દેવ મંદિર, અનાથાશ્રમમાં નિરાધાર લોકોને દાન કરવાથી આ લોક પરલોક સંબંધી સર્વે મનોરથ સંકલ્પોનું ત્વરિત ફળ-પુણ્ય મળે છે.

સર્વોપરી શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને સ્વયં બાથમાં લઈ સ્વસ્વરૂપ એવા પરમકૃપાળુ શ્રી નરનારાયણદેવના પરમ પવિત્ર સાનિધ્યમાં તથા શ્રીહરિના અપર સ્વરૂપ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી, પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી એવમ્ સમગ્ર ધર્મકુળની શુભ આજ્ઞાથી અને પરમ વંદનીય સંતોની ઉપસ્થિતિમાં તા. ૧૬-૧૨-૨૦૨૧ થી તા. ૧૪-૧-૨૦૨૨ એટલે આખો માસ પ્રાતઃકાળે શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર ધૂનનો અલૌકિક લાભ ઓફલાઈન લીધો તેજ નિમિત્તે તા. ૧૪-૧-૨૦૨૨ ના રોજ મકર સંક્રાંતિ પુણ્ય પર્વ હોવાથી આપ સૌ જીવનમાં વર્ષમાં એકવાર આવતા આવા પુણ્ય પર્વમાં દાન પુણ્ય કરીને જીવનને ધન્ય બનાવશો.

## શ્રી નરનારાયણદેવ દેશના સમસ્ત હરિમંદિરના કોઠારીશ્રી અને શ્રીનરનારાયણદેવ યુવક મંડળને અનુરોધ

શ્રી નરનારાયણદેવ દેશના તમામ શહેર અને ગામોના કોઠારીશ્રી અને શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળના પ્રતિનિધિઓને ખાસ અનુરોધ છે કે આપના ગામમાં ઉત્તરાયણ પર્વની ઝોળી ફેરવીને તે નિમિત્તે જે કાંઈ અનાજ, રોકડ કે જીવન જરૂરી પદાર્થ દાનમાં આવે તે તમામ વસ્તુઓ અમદાવાદ કાલુપુર શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં ‘‘આંગન’’ માં જમા કરાવી પહોંચ મેળવી લેશો. જે તમામ આપનું દાન અનેક નિરાધાર જરૂરિયાતવાળા લોકો સુધી પહોંચશે. આ સંકલ્પ એ આપણા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી, પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી અને પ.પૂ.અ.સૌ. ગાદીવાળાશ્રીનો છે. એટલે આ આંગનની સેવા પ્રવૃત્તિ પ.પૂ.અ.સૌ. ગાદીવાળાશ્રીની દેખરેખ નીચે આપણા સત્સંગી બહેનો દ્વારા કરવામાં આવે છે.

આ આંગનમાં દાન કરનારને ૮૦-જી હેઠળ ઈન્કમટેક્ષમાં માફી મળશે.

મહંત સ્વામી
શાસ્ત્રી સ્વામી નિર્ગુણદાસના
શ્રીહરિ સ્મૃતિ સહિત જયશ્રી સ્વામિનારાયણ.

# ઉત્તરાયણ પુણ્ય (ઝોળી) પર્વ

નામ : ..............................................................................

સરનામું : .........................................................................

ફોન નં. : ......................... મો. : ........................................

## ઉત્તરાયણ પુણ્ય પર્વ

તા. 14-1-2021ના ઉત્તરાયણ - મકરસંક્રાંતિના શ્રી નરનારાયણદેવના દર્શને પધારો ત્યારે આ કાર્ડમાં આપની ઈચ્છાનુંસાર રકમ ભરી કોઠાર ઓફિસમાંથી પહોંચ મેળવી લેવી. દૂર વસતા હરિભક્તોએ ચેક - ડ્રાફ્ટ અને ઓનલાઈનથી રકમ મોકલવી.

| વિગત | ભાવ રૂા. | વજન | ૫ કિલોના ભાવ રૂા. | આપની સેવા રૂા. |
|---|---|---|---|---|
| ચોખા | ૩૦૫૦ | ૧૦૦ કિલો | ૧૫૫ | |
| ઘઉં | ૨૦૦૦ | ૧૦૦ કિલો | ૧૦૦ | |
| મગ | ૮૦૦૦ | ૧૦૦ કિલો | ૪૦૦ | |
| તલ | ૨૪૦૦ | ૨૦ કિલો | ૬૦૦ | |
| ચણા દાળ | ૨૪૦૦ | ૨૦ કિલો | ૬૦૦ | |
| તુવેર દાળ | ૧૦૦૦૦ | ૧૦૦ કિલો | ૫૦૦ | |
| મોગર દાળ | ૭૨૦૦ | ૧૦૦ કિલો | ૩૬૦ | |
| શુદ્ધ ઘી | ૬૦૦૦ | ૧ ડબો | ૨૦૦૦ | |
| તેલ | ૧૩૦૦ | ૧ ડબો | ૪૩૦ | |
| ગોળ | ૫૦૦૦ | ૧૦૦ કિલો | ૨૫૦ | |
| ખાંડ | ૪૧૦૦ | ૧૦૦ કિલો | ૨૦૫ | |
| કુલ રૂા. | ૫૧૪૫૦ | | ૫૬૦૦ | |

દાન, વસ્તુ રૂપે, રોકડ સ્વરૂપે તથા ચેક અથવા ડ્રાફ્ટ
“શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર અમદાવાદ”ના નામે આપશો.
સ્થળ : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ ફોન : ૮૨૩૮૦૦૧૬૬૬

# सत्संग समाचार

## प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री के ४९ वे प्रागट्योत्सव को मनाया गया

पर्व ॥ जीवेम् शरद ) शतम् ॥ पर्व

श्री नरनारायण भगवान की असीम कृ-पा से और सानिध्य में पू. महंत शा. स्वामी निर्गुणधासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन तथा सभा संचालन के अर्न्तगत भगवान श्री स्वामिनारायण के सातवे पीढी में श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४९ प्रागट्योत्सव अहमदाबाद मंदिर के प्रांगण में धामोधाम से आये ब्रह्मनिष्ठ संतो और हरिभक्तो के विशाल समूह के मध्य ता. १५-१०-२०२१ ( विजया दशमी ) को प्रातः उमंग पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर प.पू. महाराजश्री श्री स्वामिनारायण बाग से मंदिर तक पदयात्रा द्वारा देव के दर्शन हेतु आये थे। ढोल नगारे तथा शहनाई के साथ संत हरिभक्तोने श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप का स्वागत किये थे। प.पू. महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री और पू. लालजी महाराजश्री तीनो अपर स्वरुपो ने आरती पूजा की थी। सभा मंडप में बिराजमान हुए । पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा श्री राजा भी देव का दर्शन किये थे। बाद में हवेलीमें बिराजमान हुए।

भूदेवो के स्वस्तिवाचन के पश्चात अग्रगण्य संत-भक्त पुण्य की छडी से पूजन-अर्चन आरती किये थे। इस अवसर डी.पी.एम. पटेल ( माणसा ) श्री स्वामिनारायण मासिक में जो जुडेगे उन्हे ५०% प्रतिशत शुल्क प्रदान करेगे। ३७ जितने लोगोने रक्तादन किये थे।

सभी संतो के प्रतिनिधि के रुप में पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासीज ( जेतलपुर ) ने प्रसंगोचित प्रवचन तथा तीनो स्वरुपो के प्रेरणात्मक शुभ आशीर्वाद दिये थे । ( गोरधनभाई वी. सीतापरा )

## श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर शरदोत्सव मनाया

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पवित्र प्रागंण में आसो सुद-१५ शरद पूर्णिमा के दिन सुदंर सफदे वस्त्रो से सजे मंडप में ठाकुरजी को बिराजमान करके रात्रि में नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ओच्छव करके सभी भक्तो को सुख दिये। पूर्णाहुति की आरती पूज्य महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने आरती उतारा था। सभी दर्शनार्थी दूध-पौवा का प्रसाद लिये। इस अवसर पर पूज्य महंत स्वामी द्वारा सुंदर आयोजन किया गया था। ( कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर )

## श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में दीपोत्सवी मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारयणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीकी प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में दीपोत्सवी के उत्सव करो परंपरारुप से सम्पन्न हुआ था।

काली चौदश ता. ३-११-२१ के दिन कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री हनुमानजी महाराज का पूजन अर्चन-आरती और अन्नकूट की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा पूर्ण किया गया।

समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन : आसो सुद-३० दिवाली ता. ४-११-२१ गुरुवार के दिन शायं ६-३० बजे मंदिर के गोर द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमल द्वारा शास्त्रोक्त विधी से पूर्ण हुई। आज के तकनीकी समय में भी कुच धर्म-प्रेमी हरिभक्त अपने व्यापार के चोपडा का पूजन धर्मकुल के हाथो द्वारा पूजन करने का अलौकिक लाभ लिये थे।

कार्तिक सुद-१ नूतन वर्ष ता. ५-११-२१ प्रातः श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती और श्रृंगार आरती बड़े महाराजने उतारी थी। शहर के हजारो हरिभक्त मंगला आरती से लेकर अन्नकूट की पूर्णाहुति आरती का दर्शन करके धन्य हुए। गाँव तक अन्नकूट पहुँचाने की सुंदर व्यवस्था पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में संत-हरिभक्तो द्वारा पूर्ण की गई। ( कोठारी स्वामी कालुपुर स्वा. मंदिर )

## जेतलपुरधाम में श्रीमद्भागवत पारायण

महाप्रतापीदेव श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की कृपा से श्री नरनारायणदेव के २०० वर्ष पर्व के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री उसी प्रकार समस्त धर्मकुल के शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुरधाम-नारायणपुरा धाम महंत स.्. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर धाम में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण १३ नवम्बर से १७ नवम्बर तक संपन्न हुआ। जिसमें वक्ता पद पर शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी ने कथा का रसपान कराये थे। प.भ. अल्काबेन विपीनभाई पटेल ( बारेजा वाले ) यजमान बने थे। इस कथा के अवसर तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था। जिस में असलाली, जेतलपुर, बारेजा के हरिभक्तो ने लाभ लिया था । कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी ब्रह्मचारी वासुदेवानंदजी तथा नारणपुरा, महेसाणा, भुज आदि धामो से संत आये थे। हरिभक्त कथा का सुंदर लाभ लिये थे। ( महंतश्री के.पी. स्वामी - जेतलपुरधाम )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में दिवाली उत्सव**

परमकृपालु श्री नरनारयणदेव तथा नारणपुरा मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्दप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा महंत स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में नारणपुरा मंदिर में दिवाली का उत्सव भव्यता से मनाया गया । ता. ३-११-२१ बुधवार काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी महाराज का पूजन किया गया था । जिसमें यजमान पद पर प.भ. श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल तथा प.भ.श्री रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल ( जमीयतपुरा ) ने लाभ उठाया था । ता. ४-११-२१ को भव्य चोपडा पूजन भूदेव और संतोने किया था ।५-११-२१ को सुंदर अन्नकूट रखा गया था । इसमें यजमान पद पर प.भ. श्री गटोरभाई खीमजीभाई पटेल परिवार ( सुरेन्दनगर वाले ) तथा प.भ. श्री गांडाभाई जुगलदास पटेल परिवार ( सोलावाले ) ने लाभ लिया था । ता. १५-११-२१ सोमवार को प्रबोधिनी एकादशी को ठाकुरजी के आगे सुंदर हाटडी बनाई गई थी । सभी उत्सव में अधिक संख्या में हरिभक्तो ने लाभ उठाया । ( को. पूर्णस्वरुप स्वामी - नारणपुरा )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडा मुवाडी का ६ठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव**

परमकृपालु श्री नरनारयणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर धाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन के अनुसार श्री स्वामिनारायण मंदिर लीम्बडा मुवाडी का ६ठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव ता. २५-११-२१ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

पाटोत्सव के प्रसंग पर जेतलपुर धाम तथा नारायणपुरा धाम से शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी, शा. प्रेमस्वरुपदासजी स्वामी, तथा अनंत स्वरुपदासजी स्वामी आये थे । तथा ठाकुरजी की आरती उतारे थे । अभिषेक तथा दिव्य सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । इस प्रसंग में भूदेव पाटोत्सव के यमजान प.भ. श्री हर्षदभाई सुखलाल पटेल तथा प.भ.श्री मनहरभाई सुखलाल पटेल परिवार )नानी सरसणवर्त - अहमदाबाद ) ने विधिवत पूजा किये थे । इस अवसर पर आस-पास के गाँव वाले आये थे । तथा सभी हरिभक्तोने लाभ उठाये थे ।

**श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) द्वारा "पर्व" महामहोत्सव के उपलक्ष्य में विविध सत्संग लक्षीय प्रवृत्ति**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी के मार्गदर्शन से ( १ ) ता. ३-१०-२१ डॉ. भरतभाई डी. सुहागिया के मुख्य यजमान पद पर २२५ जितने भक्तजन द्वारा समूह महापूजा किये । ( २ ) ता. ६-१०-२१ अहमदाबाद शहर प्रसादी के जगहो की पदयात्रा विसनगर वडनगर तथा चकलेश्वर महादेव, अंबावावाणु श्री रामजी मंदिर, श्री पंचमुखी तथा छबिला हनुमानजी, शंकराचार्य की हवेली, महालक्ष्मी मंदिर, मुरलीधर मंदिर और सारंगपुर तथा रायपुर दरवाजा पदयात्रा में अपने अन्य मंदिर से संत-पार्षद तथा हरिभक्त जुडे थे । ( ३ ) श्री शारदीय नवरात्रि के ९ दिन तक तथा १९-१०-२१ शरदोत्सव अवसर पर दिव्य रासोत्सव. ( ४ ) ता. १-११-२१ अहमदाबाद शहर प्रसादी के स्थलो की पदयात्रा, गुप्तेश्वर, तथा गौरीशंकर महादेव, कालुपुर दरवाजा, लालदास गोर, तथा बेचर मणली वाला का घर कालारामजी तथा हीराचंद चोकसी का घर, नये वास में सभा स्थान तथा पुरुषोत्तमदास पटेल का घर, कालुपुर अपना मंदिर, श्वेतकृष्ण गणेश बारीका किनारा आदेशलेकर भट्ट का पूरा किला-तेल की टंकी ( ५ ) श्री घनश्याम महाराज के सामने अन्नकूट-इंदिरा एकादशी, पाफडा जलेवी ( दशहरा ) सीताफल ( पांशाकुशा एकादशी ) अमरुद ( रमा एकादशी ) सुखडी ( काली चौदश हनुमाजी के सामने ) दिपावली के अवसर पर दीपमाला तथा परम्परागत नये वर्ष के अवसर पर भव्य अन्नकूट श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी ( बापूनगर ) मंदिर में प.भ. श्री दासभाई के मार्गदर्शन के उपलक्ष्य में क्रमश ) २०० घंटे की धुन तथा बहनो की संयुक्त धुन तथा बहनो के मंदिर में अलग से १५० घंटे की धुन की गई थी । ( गोरधनभाई वी. सीतापरा )

**गांधीनगर से-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा पर्व के उपलक्ष्य में सत्संग का क्रिया कलाप**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से गांधीनगर से-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में संत-मंडल द्वारा गाँवो तथा अन्य स्थलो पर की गई सामाजिक गति विधियाँ :- ( १ ) ३-९-२१ को अडालज गाँव में सत्संग सभा स.गु. महंतश्री पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा । ( २ ) ३-९-२१ वावोल गाँव सत्संग सभा महंतश्री पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा । ( ३ ) ३-९-२१ धरमपुर गाँव सत्संग सभा पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा । ( ४ ) ५-५-२१ को खोरज गाँव सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी और शा. राम स्वामी द्वारा । ( ५ ) ६-९-२१ को मीठाखली अहमदाबाद सभा पी.पी. स्वामी और घनश्याम स्वामी द्वारा । ( ६ ) ७-९-२१ और ८-९-२१ मेमनगर मे पी.पी. स्वामी और घनश्याम स्वामी द्वारा तथा महादेवनगर सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी । ( ७ ) ८-९-२१ से १०-९-२१ सत्संग सभा पी.पी. स्वामी और घनश्याम स्वामी । ( ८ ) ११-९-२१ बापुनगर सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी और जनकभाई द्वारा । ( ९ ) २२-९-२१ हर्षद कोलोनी महामंत्र धुन शा. पी.पी. स्वामी और घर्मस्वरुप स्वामी द्वारा । ( १० ) २५-९-२१ मोटेरा पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा सत्संग सभा । ( ११ ) २९-९-२१ माणेकपुर चौधरी गाँव में सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, गोपाल स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा । ( १२ ) ३१-९-२१ कोटेश्वर गुरुकुल में सत्संग सभा शा. पी.पी.

स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, शा. राम स्वामी और गोपाल स्वामी द्वारा । ( १३ ) १-१०-२१ शीतल में सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा ।( १४ ) २-१०-२१ मेडा गाँव में एकादशी सभा शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, घनश्याम स्वामी आदि संत मंडल द्वारा ।( १५ ) ३-१०-२१ टोरडा में सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा ।( १६ ) ६-१०-२१ सलाल गाँव सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा ।( १७ ) हर्षद कोलोनी रात में शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी और धर्मस्वरुपद स्वामी द्वारा । ( १८ ) १२-१०-२१ कर्मशक्ति में शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा सत्संग सभा । ( १९ ) १९-१०-२१ को मेडा सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा । ( २० ) १७-१०-२१ करजीसण में शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, घनश्याम स्वामी द्वारा सत्संग सभा ।( २१ ) १७-१०-२१ मणीपुरा गाँव में शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा सत्संग सभा की गई ।

**श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ में "पर्व" के उपलक्ष्य में अखंड धुन और कीर्तन भक्ति**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल ( ओला ) की याद में प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल यजमानस्थान पर 'पर्व' के उपलक्ष्य में ता. १०-१०-२१ को प्रातः ६ बजे से ६-३० तकश्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई । ( विपीन मणिभाई पटेल )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण में "पर्व" के उपलक्ष्य मेधुन**

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण में अपने पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ११-१०-२१ के दिन प्रातः ८ से ११ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई थी । इस अवसर पर शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी करजीसण गाँव की महिमा तथा दंढाव्य देश के गाँवो का महत्व बताये थे । इस अवसर के यजमान बाबुभाई जोईताराम पटेल ( कोठारी ) और हर्षदभाई पटेल आदि ने लाभ उठाया था । ( समस्त करजीसण गाँव )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में अखंड धुन**

श्री नरनारायणदेव की असीमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् धर्मकुल के आ शीर्वाद से धमासणा गांव में ''पर्व'' के निमित्त ता. १५-१०-२१ शुक्रवार को प्रातः ७ बजे से शायं ७ बजे तक स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून रखी गई थी ।( कोठारी धमासणा )

**धाकडी (ता. विरमगाम) गाँव में "पर्व" के निमित्त २०० घंटे की धून**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद एवम् जेतलपुरधाम, नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. स्वामी पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन प्रेरणा से धाकडी श्री स्वामिनारायण मंदिर में नरनारायणदेव के २०० वे ''पर्व'' महामहोत्सव के निमित्त सभी भाई बहन मिलकर कुल २०० घंटे श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन किये थे ।( कोठारीश्री धाकडी )

**धरमपुर गाँव में "पर्व" के निमित्त २०० घंटे की धुन**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से धरमपुर गाँव के सभी हरिभक्त मिलकर ता. २५-८-२१ से ता. २९-९-२१ तक ''पर्व'' महामहोत्सव के उफलक्ष्य में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की २०० घंटे तक मंत्र लेखन नोटबुक में किये थे । ( कोठारीश्री धरमपुर खाखरिया सत्संग मंडल )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल द्वारा "पर्व" निमित्त धार्मिक क्रिया**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा आशीर्वाद से यहाँ के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के निमित्ते सत्संग क्रिया कलाप हुआ ।

ता. २५-९-२१ कालुपुर मंदिर में आयोजित २०० घंटे की धुन संत हरिभक्त आये थे । प्रति शुक्रवार को यहाँ के महंत के प्रेरणा से गरीब परिवार को खिचडी वितरण ता. ३०-९-२१ से ६-१०-२१ तक बोपल मंदिर में रात्रिय पारायण मुख्य नंद संतो के जीवन कथा पर महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी रसपान कराया था । इसके यजमान अ.नि.प.भ. गोविंदभाई खीमजी और प.भ. रतीभाई खीमजी पटेल परिवार था । बोपल महिला मंडल और हरिभक्तोने लाभ उठाया था ।( प्रवीणभाई उपाध्याय - बोपल )

**"पर्व" महामहोत्सव के निमित्ते महादेवनगर जडेश्वर श्री स्वामिनारायण मंदिर में २०० घंटे की धून**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर ( बहनोका ) में अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे की महामंत्र धुन और २०० वचनामृत पारायण के पूर्णाहुति के दिन हवेली के बहनो द्वारा की गयी थी । इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । खीचडी उत्सव करके सबको आशीर्वाद दिये । आस-पास की बहनोने लाभ लिया था ।( जडेश्वर मंदिर महिला - मंडल )

**लालोडाधाम में "पर्व" के निमित्ते धुन**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद तथा स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ता. ईडर) में ''पर्व'' महामहोत्सव के लिये ता. १०-१०-२१ रविवार के दिन प्रातः ७

बजे से दोपहर ३ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी । जिसमें गाँव तथा आस-पास के हरिभक्तोने भाग लिया था । ईडर तथा सापावाडा मंदिर के महंत स्वामी संत-मंडल के साथ आये थे । सभी धुन की पूर्णाहुति के बाद प्रसाद लिये थे । श्री नरनारायणधेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा प्रदान किये थे ।( स्वामी बालकृष्णदासजी )

**नवा वाडज मंदिर द्वारा आदरज में अन्नकूट-महोत्सव**

पूज्य भक्तिमाता के प्रागट्य दिन कार्तिक सुद-१५ ता. १९-११-२१ के दिन नवा वाडज भक्ति मंडल द्वारा श्रीहरि के अति अलौकिक महा प्रसादी भूत आदरज श्री स्वामिनारायण मंदिर में सभी बहनोने भक्ति भाव से घर से शुद्ध और स्वछ अन्नकूट बनाकर ठाकुरजी को चढाई थी । वहाँ के पूजारी पू. राम स्वामीने आदरज के महात्म्य का वर्णन किये थे । सभी हरिभक्त सुने थे ।( भक्ति मंडल नवा वाडज )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा**

श्री स्वामिनारायणम ंदिर नालंदा-२ मोडासा में ता. १५-११-२१ के दिन तुलसी विवाह मनाया गया था । श्री घनश्याम महिला मंडल ने अथक सेवा दी । सभी ने सुंदर दर्शन का लाभ उठाया । वरपक्ष के यजमान हर्षाबेन डी. पटेल, कन्यापक्ष के यजमान स्वीटीबेन एन. पटेल थी ।( के.बी. प्रजापति )

## मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

**“पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में मेमका गाँवमें पारायण**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली मंदिर के वयोवृद्ध संत पूज्य स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से मूली श्री राधाकृष्णदेव दश के प्रसादी स्वरुप मेमका गाँव में श्री नरनारायणदेव के २०० वे ‘‘पर्व’’ महामहोत्सव के निमित्ते श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से संगीत के सुर से पूर्ण हुई । कई लोग नशा छोडने की प्रतिज्ञा लिये थे। सभा का संचालन नित्यप्रकाश स्वामी ने किया था । गाँव के सभी हरिभक्त कथा सुनकर धन्य हुए । ( मेमका सत्संग सभा द्वारा कनुभाई पटेल )

**ध्रांगधा (हलवद रोड) मंदिर में “पर्व” के निमित्ते २०० घंटे की धुन**

परमकृपालु नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से प.पू.अ.सौ. गादीवालाके कृपा से ध्रांगध्रा हलवद रोड पर स्थित अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर ‘‘पर्व’’ महामहोत्सव के निमित्ते २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई थी । जिस में यहाँ की सां.यो. कंचनबा आदि बहनो ने धुन में भाग लिये थे । ( अनिलभाई ध्रांगध्रा )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (जूनाटावरवाला) में सप्ताह पारायण**

परमकृपालु नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से हलवद ( जूना टावरवाला ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा. स्वामी भक्तिनंदनजी के वक्ता पद से पितृ मास में रात्रिय श्रीमद् भागवत सप्ताह आ आयोजन किया गया था । इस अवसर पर अपने ‘‘पर्व’’ महामहोत्सव की रुप रेखा सबको समझाया गया था । ( दूधरेजिया अनिलभाई )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर वंकानेर में “पर्व” महामहोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग प्रवृत्ति**

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव तथा मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशी र्वाद से तथा वांकानेर मंदिर में सेवापूजा करते शास्त्री स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री नरनारायण द्विशताब्दी पर्व के निमित्ते वांकानेर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ६-१०-२१ के दिन रात्रि में ९-३० से १२-३० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन कीर्तन सभी हरिभक्तो के साथ मिलकर किया गया था ।( जे.के. स्वामी वांकानेर )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. चूडा) में १०८ पाटोत्सव**

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में १०८ वाँ पाटोत्सव विधि सम्पन्न अच्छे से की गई । ठाकुरजी के लिये अन्नकूट तथा बहनो ने कथा का लाभ उठाया था ।( कोठारीश्री कारोल )

## विदेश सत्संग समाचार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी (आस्ट्रेलीया)**

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी ब्लेक टाउन **ISSO**( में दिवाली २०२१ का उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

४ महीने के लम्बे **LOCKDOWN** के बाद कोविड-१९ का प्रतिबंध हल्का होने के कारण मंदिर के सभी भाई-बहन उत्साह पूर्वक श्रीहरिकृष्ण महाराज को अन्नकूट किये थे। तथा सिडनी के हजारो भक्तोने दर्शन किया था।

मंदिर में २-११-२१ के दिन लक्ष्मीपूजन ३-११-२१ को काली चौदश, श्री हनुमाजी की पूजा की गई थी।

ता. ४-११-२१ को दिवाली के दिन प्रातः हाटी का दर्शन प्रबन्ध था । शायं काल को चोपडा पूजन में हजारो हरिभक्त आये थे । रात्रि के समय मंदिर में बच्चो के लिये **FIRWORKS** का उत्सव किया गया था।

ता. ५-११-२१ को प्रातः १० बजे अन्नकूट की आरती की गई थी।

अन्नकूट का दर्शन पूरे दिन चला । शायं ८ बजे पुनः अन्नकूट की महा आरती की गई थी । इस में भी अधिक संख्या में हरिभक्तोने भाग लिये थे । कोविड गाईडलाईन का सतत ध्यान रखा गया था ।( सिडनी से ली. प्रितेश केशव )

## अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

**भादरवा सुद-२** अ.नि. हेमलताबेन शांतिभाई चौहाण ( नडीयाद ), प.भ. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल ( गांधीनगर ), सां.यो. केसरबाई तथा मंजुबेन रतीलाल वरसाणी ( भक्तिनगर-कच्छ ), अ.नि. प्रेमबाई कानजी पूंजाणी ( भक्तिनगर-कच्छ ), अ.नि. प्रेमजी धनजी भंडेरी ( सुखपर-कच्छ ). **भादरवा सुद-३** अ.नि. अमरबाई शामजी विराणी ( गोधरा-कच्छ ), प.भ. प्रेमजी शामजी वेकरीया तथा धनबाई प्रेमजी ( रामपर वेकरा-कच्छ ). **भादरवा सुद-४** प.भ. भरतभाई एम. पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. कीर्तिकुमार घनश्यामभाई पटेल ( विहारवाळा ), प.भ. चौहाण मंजुलाबेन रसिकलाल ( कांकरिया ). **भादरवा सुद-५** अ.नि. कांतिभाई भगवानदास सोनी. **भादरवा सुद-६** प.भ. सोनी शर्मिलाबेन अश्विनभाई ( अमदावाद ), प.भ. सोनी कुंज दर्शनभाई ( अमदावाद ), प.भ. भावसार उषाबेन रश्मिकांत ( अमदावाद ), प.भ. पटेल उषाबेन मुकेशकुमार ( अमदावाद ), प.भ. क्याडा हिंमतभाई मुळजीभाई ( निकोल ), अ.नि. हिंमतभाई नारायणदास ठक्कर ( अमदावाद ), अ.नि. स.गु. स्वामी नारायणस्वरूपदासजी ( अंकलेश्वर ), प.भ. कनुभाई हरिभाई वेकरीया ( जीवराजपार्क ), प.भ. मुळजीभाई छगनभाई रामाणी ( नवा सुदामडा ). **भादरवा सुद-७** प.भ. हरजीभाई विश्रामभाई देवजीभाई पिंडोरीया ( सरली-कच्छ ), अ.नि. शामजी वस्ता केराई ( नारायणपर-कच्छ ), प.भ. प्रेमबाई केराई ( नारायणपर-कच्छ ), अ.नि. प्रेमबाई शिवजी जीणा केराई ( नारायणपर-कच्छ ), अ.नि. मनजी नाथा सेंधाणी ( नारायणपर-कच्छ ), अ.नि. राधा करशन पिंडोरीया ( नारायणपर-कच्छ ), अ.नि. वाघजी करशन पिंडोरीया ( नारायणपर-कच्छ ). प.भ. मगनभाई चौधरी ( वाली-राज. ). **भादरवा सुद-८** अ.नि. धवल भगवानदास सींगाळा ( मुंबई ), प.भ. राधाबेन वेलजी हिराणी ( मानकुवा-कच्छ ), प.भ. धनबाई करशन वरसाणी ( भारासर-कच्छ ). **भादरवा सुद-११** अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार ( सरसपुर ). **भादरवा सुद-१२** प.भ. सोमीबेन विष्णुलाल मणीलाल पटेल ( थलतेज ), अ.नि. रतनबेन खीमजीभाई चौहाण ( नडीयाद ), प.भ. तीर्थ कैलाशबेन पटेल ( अमदावाद ), अ.नि. समताबेन छगनभाई कानाणी, जयरामभाई कानाणी ( अमदावाद ), प.भ. कैलाशबेन घनश्यामभाई व्यास ( अमदावाद ), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. पटेल जगदीशभाई चिमनभाई ( गांधीनगर ), प.भ. धर्म बिन्देश पटेल तथा कियान बिंदेश पटेल, ( गांधीनगर ), प.भ. मनजी प्रेमजी हिराणी ( गोधरा-कच्छ ), प.भ. राधबाई वालजी हिराणी ( गोधरा-कच्छ ). **भादरवा सुद-१२/१३** अ.नि. खीमजी केसरा हिराणी ( मांडवी-कच्छ ), प.भ. प्रेमबाई रवजी हालाई ( रामपरवेकरा-कच्छ ). **भादरवा सुद-१४** प.भ. रावजीभाई डाह्याभाई पटेल ( चांदखेडा ), प.भ. पटेल जीतेन्द्रभाई मनजीभाई ( जूना घनश्यामगढ ), प.भ. नयनकुमार दशरथभाई पटेल ( डुंगरी ), प.भ. मुकेशभाई माणेकलाल पटेल ( डांगरवा ), अ.नि. मेघजीभाई कानजीभाई सांखला ( नडीयाद ), एक हरिभक्त ( झुंडाल ), प.भ. खख्खर जयंतीलाल ओधवजीभाई ( मोरबी ), प.भ. दिलीपभाई ठक्कर ( दियोदर ). **भादरवा सुद-१५** अ.नि. पुरीबेन खीमजीभाई भगत ( मोरबी ), श्री नरनारायण सत्संग मंडळ ( भाभर ).

**भादरवा वद-१** अ.नि. रावजीभाई मणीभाई पटेल ( कुबडथल ), अ.नि. पाटीदार सवजीभाई विश्रामभाई ( कुक्षी-एम.पी. ), अ.नि. स.गु. स्वा. धर्मनंदनदासजी, अ.नि. स्वामी भगवतप्रकाशदासजी ( उना ), अ.नि. रमणभाई बकोरभाई पटेल ( साबरमती ), अ.नि. जागाणी बालुभाई परसोतमभाई ( अमदावाद ). **भादरवा वद-२** अ.नि. सोनी वाडीलाल व्रजलाल ( ईसनपुर ), प.भ. पटेल रतीभाई खीमजीभाई ( मेडावाळा ), प.भ. शिवजी लालजी हिराणी ( मिरजापर-कच्छ ), प.भ. गीताबेन महेशभाई पटेल ( अमदावाद ). **भादरवा वद-३** अ.नि. चिनुभाई ईश्वरभाई पटेल ( झुंडाल ), अ.नि. वल्लभभाई भुराभाई नसित ( अमदावाद ), अ.नि. भीखाभाई अंबालाल भावसार ( सरसपुर ), प.भ. अरविंदभाई अंबालाल पटेल ( कपडवंज ), प.भ. पटेल बिपीनभाई ईश्वरभाई ( वावोल ), प.भ. वाडीभाई कालीदास पटेल ( गुलाबपुरा ), प.भ. मनुभाई नरसीभाई राठोड ( रामपुरा ), अ.नि. पटेल कांतिलाल चुनीलाल ( कडी ), प.भ. पटेल दशरथभाई प्रहलादभाई ( अमदावाद ), अ.नि. प्रकाशभाई रमेशभाई पटेल ( कुबडथल ), अ.नि. सिल्कीबेन बिंदेशभाई पटेल ( गांधीनगर ), सां.यो. सीताबा वालजी ( मेधपर-कच्छ ). **भादरवा वद-४** प.भ. वास्तव गीरीशचंद्र एस. ( अमदावाद ), अ.नि. शामजीभाई छगनभाई शेलडीया ( बापुनगर ), अ.नि. धीरूभाई हिराभाई पटेल ( आकरूंद ), प.भ. मणीलाल रामजीभाई चौधरी ( समौ ), प.भ. भगवानजीभाई प्रागजीभाई चौहाण ( सुरत ). **भादरवा वद-५** अ.नि. सविताबेन बाबुभाई देसाई ( बापुनगर ), अ.नि. चिमनभाई मुलचंदभाई भावसार ( अमदावाद ), प.भ. अरविंदभाई दोंगा ( अमदावाद ), अ.नि. प्रभुदास लल्लुभाई पटेल ( झुंडाल ), अ.नि. मूळजीभाई मोवताभाई पटेल ( आकरूंद ), प.भ. पटेल मगनभाई रत्नाभाई ( जसमतपुर ), अ.नि. गीरीशभाई पटेल ( साबरमती ), अ.नि. राधाबाई कानजी भाणाणी ( बळदीया-कच्छ ). **भादरवा वद-६** प.भ. संजयभाई नंदलाल ( अमदावाद ), प.भ. रूखीबेन कानजीभाई पटेल ( देवपुरा ). **भादरवा वद-७** अ.नि. शंकरलाल नारणदास पटेल ( कोठा ), अ.नि. मुलचंदभाई नथुदास भावसार ( अमदावाद ), अ.नि. चिमनभाई बेचरभाई पटेल ( साबरमती ). **भादरवा वद-८** प.भ. प्रज्ञाबेन प्रकाशभाई भावसार ( महेसाणा ), अ.नि. भरतभाई रमणलाल भावसार ( सरसपुर ), अ.नि. रमणलाल नारायणदास शाह ( अमदावाद ), प.भ. जीवराजभाई ठाकरसीभाई बारेवडीया ( पच्छम ), प.भ. पोपटलाल वेलजीभाई चौधरी ( सोलैया ), अ.नि. विरजी प्रेमजी भुडीया ( सुरजपर-कच्छ ). **भादरवा वद-९** अ.नि. किशोरचंद्र गोपालजीभाई ओझा ( अमदावाद ), अ.नि. प्रेमीलाबेन घनश्यामभाई काछीया ( बालासिनोर ), अ.नि. बाबुभाई रामजीभाई गालाणी ( सुरत ), प.भ. रामजी देवजी केराई, नलीनाबेन रामजी केराई ( बळदीया-कच्छ ), प.भ. प्रविणभाई त्रिभोवनभाई पटेल ( अमदावाद ), प.भ. धीरज धनजी राबडीया ( वाडासर-कच्छ ), प.भ. सुरेशभाई शीवजी राबडीया ( मांडवी-कच्छ ). **भादरवा वद-१०** अ.नि. बाबुभाई मनजीभाई कथीरीया ( निकोल ), प.भ. करशनभाई कानजीभाई राघवाणी ( बळदीया-कच्छ ), प.भ. भावनाबेन परेशभाई पटेल ( अमदावाद ), प.भ. पटेल कांतिभाई चंदुभाई नवीनभाई ( मोखासण ), प.भ. रामबाईबेन रतनसिंहभाई भावाणी ( ईन्दौर ). **भादरवा वद-११** अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार ( सरसपुर ), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. धर्म बिंदेशभाई पटेल तथा कियान बिन्देशभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. पटेल लीलाबेन गोरधनभाई ( ओढव ), प.भ. राठोड विजयभाई घनश्यामभाई ( अमदावाद ),

प.भ. दरजी तेजेन्द्र अशोकभाई, प.भ. जयंतीभाई रामदासभाई पटेल ( वडु ) **भादरवा वद-१२** अ.नि. भीमजीभाई मेधजीभाई डोबरीया ( निकोल ), प.भ. पटेल हिराभाई जेठाभाई ( बायड ), प.भ. ललीताबेन चिमनभाई अमथाभाई ( झूंडाल ), प.भ. जीवराजभाई नानजीभाई ( परवाळा ), प.भ. अंकितभाई गजेरा ( अमदावाद ), प.भ. मुकुंदभाई रेवाभाई पटेल ( बायड ), प.भ. गोमतीबेन सोमाभाई ( जरवला ), प.भ. डॉ. धारा मंथन पटेल ( अमदावाद ), प.भ. चंद्रेश विठ्ठलाणी ( मुंबई ), प.भ. भक्तिभाई मगनभाई पटेल ( डांगरवा ). **भादरवा वद-१३** प.भ. पटेल कांताबेन प्रहलादभाई ( डांगरवा ), अ.नि. महेन्द्रभाई मूळजीभाई ठक्कर ( अमदावाद ), प.भ. महेन्द्रकुमार नागरदास पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. निव आर्जव परीख ( अमदावाद ), प.भ. रमीलाबेन प्रविणभाई पटेल ( ईटादरा ), प.भ. विजय वासुदेवभाई गज्जर ( अमदावाद ), प.भ. चौधरी नारायणभाई शीवाभाई ( बालवा ), अ.नि. रणछोडभाई हिराभाई पटेल ( हिंमतनगर ). **भादरवा वद-१४** प.भ. भूपेन्द्रभाई नटवरभाई पटेल ( कुबडथल ). **भादरवा वद-३०** प.भ. ईलाबेन नरेन्द्रभाई चोकसी ( अमदावाद ), प.भ. नानुभाई रवजीभाई धेलाणी ( निकोल ), अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल शाह ( अमदावाद ), प.भ. जेठालाल धनजी सवाणी ( केरा-कच्छ ), अ.नि. दिनकरराय त्रिकमलाल आचार्य ( अमदावाद ), प.भ. डोडीया गीताबेन किशोरभाई ( निकोल ), प.भ. चोटलीया वाघजीभाई मनजीभाई ( जूनागढ ).

**आसो सुद-१** प.भ. कौशलेन्द्र विक्रमभाई पटेल ( असलाली ). **आसो सुद-२** अ.नि. सुनिलकुमार पोपटभाई पटेल ( धमासणा ), अ.नि. रतनबाई हरजी राबडीया ( मांडवी-कच्छ ). **आसो सुद-३/४** प.भ. मनन मुकुंदभाई पूजारा ( अमदावाद ), प.भ. प्रविणभाई वी. एम. पटेल, शोभनाबेन वी. ( वडला ), अ.नि. करशन धनजी राबडीया ( वाडासर-कच्छ ), अ.नि. कल्याणभाई रामजीभाई वेकरीया ( रामपुरा ). **आसो सुद-५** अ.नि. चमनभाई छनाभाई ( चैनपुर ), प.भ. चोकसी मनीषभाई जीतुभाई ( अमदावाद ), प.भ. महेन्द्रभाई शिवदास ( भाउपुरा ), प.भ. हंसाबेन नंदुभाई पटेल ( पोरवाळा-अमदावाद ), अ.नि. हरजीभाई बबाभाई पटेल ( अमदावाद ), प.भ. रिकीन नरेशकुमार ठक्कर ( अमदावाद ), प.भ. ठक्कर गीताबेन कनुभाई ( दियोदर ), प.भ. जयंतीभाई पटेल ( करजीसण ). **आसो सुद-६** अ.नि. शांताबेन बाबुलाल सोनी ( वडोदरा ), प.भ. रमेशभाई जयरामभाई वघासीया ( सुरत ), प.भ. खीमजीभाई नाथाभाई वाघजीयाणी ( केरा-कच्छ ), अ.नि. प्रेमजी मेघजी गोरसीया ( मिरजापर-कच्छ ). **आसो सुद-७** प.भ. खीमजी नाथा वाघजीयाणी ( केरा-कच्छ ), एक हरिभक्त ( कच्छ-भुज ). **आसो सुद-८** अ.नि. सतीषभाई हरिभाई पटेल ( मेथाण ). **आसो सुद-९** प.भ. पटेल केतनभाई नटवरभाई ( मरतोली ), प.भ. मोरसीया हार्दिकभाई परसोतमभाई ( रतनपर ), अ.नि. शिवजी कानजी हिराणी ( मानकुवा-कच्छ ). **आसो सुद-१०** प.भ. वास्तव गीरीशचंद्र एच. ( भक्तिनगर ), प.भ. देवजी कुरजी हिराणी, प.भ. वरसाणी मनसुख कानजी ( भारासर-कच्छ ), अ.नि. डाहीबेन पूंजाभाई पटेल ( विरावाडा ), प.भ. विनोदभाई जोईताराम पटेल ( गुलाबपुरा ). **आसो सुद-११** प.भ. रूद्र आशिष भावसार ( सरसपुर ), प.भ. किरणभाई अरविंदभाई नारायणदास पटेल ( करजीसण ). **आसो सुद-१२** रामभाई मोहनभाई पटेल ( हिंमतनगर ), प.भ. रमणीकभाई मूळजीभाई पटेल ( अमदावाद ), प.भ. जसुभाई कमाभाई ( राणीप ), प.भ. वेकरीया बालुभाई भीमजीभाई ( निकोल ), प.भ. पटेल भगवानभाई विठ्ठलदास ( अमदावाद ), प.भ. पटेल चंदुभाई धनजीभाई ( अमदावाद ), प.भ. चौधरी आकाशभाई विष्णुभाई ( ईश्वरपुरा ) प.भ. चिराग नरेन्द्रभाई ( साणंद ), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. धर्म बिंदेश पटेल, कियान बिंदेश पटेल ( गांधीनगर ) **आसो सुद-१४** अ.नि. भूपेशभाई गोविंदभाई हालाई ( माधापर-कच्छ ), प.भ. रसीलाबेन रजनीभाई ( सुरत ), अ.नि. राधाबाई कानजी खीमजी वेकरीया ( बळदीया-कच्छ ). **आसो सुद-१५** मोदी नवीनचंद्र मणीलाल ( वडनगर ), प.भ. हसुमतीबेन घनश्यामभाई झांझरकीया ( अमदावाद ), श्री स्वामिनारायण मंदिर ( निकोल ), अ.नि. मोदी पुरूषोत्तमदास अमरतदास ( नरोडा ).

**आसो वद-३** प.भ. रेखाबेन भरतभाई ( थलतेज ), प.भ. वालबाई विसराम नाथाणी ( बळदीया-कच्छ ). **आसो वद-४** प.भ. चौहाण खुमानसिंह हेमाजीभाई ( टांकीया ), प.भ. प्रहलादभाई विठ्ठलभाई पटेल ( अमदावाद ), प.भ. मंजुलाबेन जसवंतलाल पटेल ( कुबडथल ), प.भ. निलकंठभाई एम. पटेल ( सेटेलाईट ), अ.नि. सां.यो. कमळाबानी स्मृति अर्थे ( सुरेन्द्रनगर ). **आसो वद-५** अ.नि. शकरीबेन शंकरदास पटेल ( चडासणा ), प.भ. हिराणी मानबाई विश्राम ( मिरजापर-कच्छ ), प.भ. नानुबेन रतनसिंह ( मोरबी ), प.भ. धिरेनभाई अनंतराय कामदार ( पोरबंदर ). **आसो वद-६** हरिशकुमार एस. वरसाणी ( अमदावाद ), प.भ. ईशाबेन गांडाभाई पूंजलदास पटेल ( करजीसण ), अ.नि. जमनादास ठाकरसीभाई पाटडीया ( राजकोट ), प.भ. रमणभाई ईश्वरभाई पटेल ( अमदावाद ). **आसो वद-७** प.भ. रश्मिकांत मस्की परिवार ( अमदावाद ). **आसो वद-८** अ.नि. जगदीशभाई खीमजीबाई वडगामा ( माथकवाळा ), प.भ. लाभुबेन पटेल ( अमदावाद ). **आसो वद-१०** प.भ. हर्षदभाई लालभाई पटेल ( शीलज ), प.भ. चंदुभाई विठ्ठलभाई पटेल ( निकोल ), प.भ. हरेश नारण जेसाणी ( बळदीया-कच्छ ), अ.नि. सोमदास माधवदास पटेल ( वडु ), प.भ. घनश्यामभाई अंबालाल शेलत ( अमेरिका ). **आसो वद-११** अ.नि. माणेकलाल विठ्ठलदास भावसार ( सरसपुर ). **आसो वद-१२** प.भ. लीलाबेन गोविंदभई सोमाभाई पटेल ( मोखासण ), प.भ. जयनित पंकजभाई भावसार ( अमदावाद ), प.भ. विमलभाई राजेशभाई पटेल ( महादेवनगर ), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. धर्म बिंदेश पटेल तथा कियान बिन्देश पटेल ( गांधीनगर ), प.भ. प्रफुलभाई परसोतमभाई पटेल ( अमदावाद ), प.भ. हरगोविंदभाई नानजीभाई ( विसतपुरा ), प.भ. किशोरभाई भीखाभाई कैयाडा ( निकोल ), अ.नि. कनुभाई वेलजीभाई चौधरी ( चराडा ). **आसो वद-१४** प.भ. स्नेहाबेन जतीनभाई गजेरा ( अमदावाद ), प.भ. मुकुंदभाई शकरचंद भावसार ( अमदावाद ). **आसो वद-३०** प.भ. जे. के. चीनाराणा ( नखत्राणा-कच्छ )

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

शिकागो में अन्नकूट

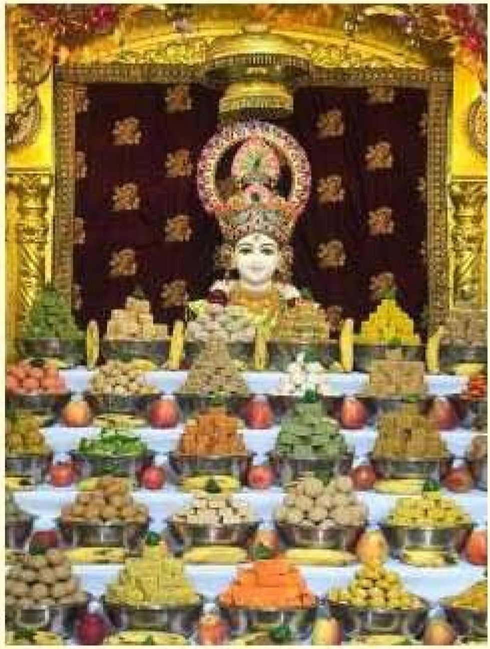

नारणपुरा में अन्नकूट

न्युयोर्क चेस्टर मे अन्नकूट

कोटा में अन्नकूट दर्शन

लीमडा मुवाडी गाँव में पाटोत्सव सभा

नारणघाट मंदिर शरदोत्सव

छपैया में वंचितो को छातो और शाल का वितरण

अहमदाबाद रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर पर अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री तथा अन्नकूट दर्शन

देव प्रबोधिनी एकादशी की रात्री में श्री नरनारायणदेव के समक्ष पाँच आरती और औच्छव मंडल द्वारा पुरी रात ओच्छव करते औच्छव मंडल

गामडी गाँव में शाकोत्सव के अवसर पर ठाकुरजीकी आरती करते प.पू. लालजी महाराजश्री

प.पू. आचार्य महाराजश्री का ४१ वां प्रागट्योत्सव

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 * Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023 Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान

श्री नरनारायण भगवान का २०० वर्ष

# पर्व

२७ फरवरी से ५ मार्च २०२२

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की ऑफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है ।

http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharnaul